लिखित जप

देश विदेश की विभिन्न भाषाओं में 'राम'

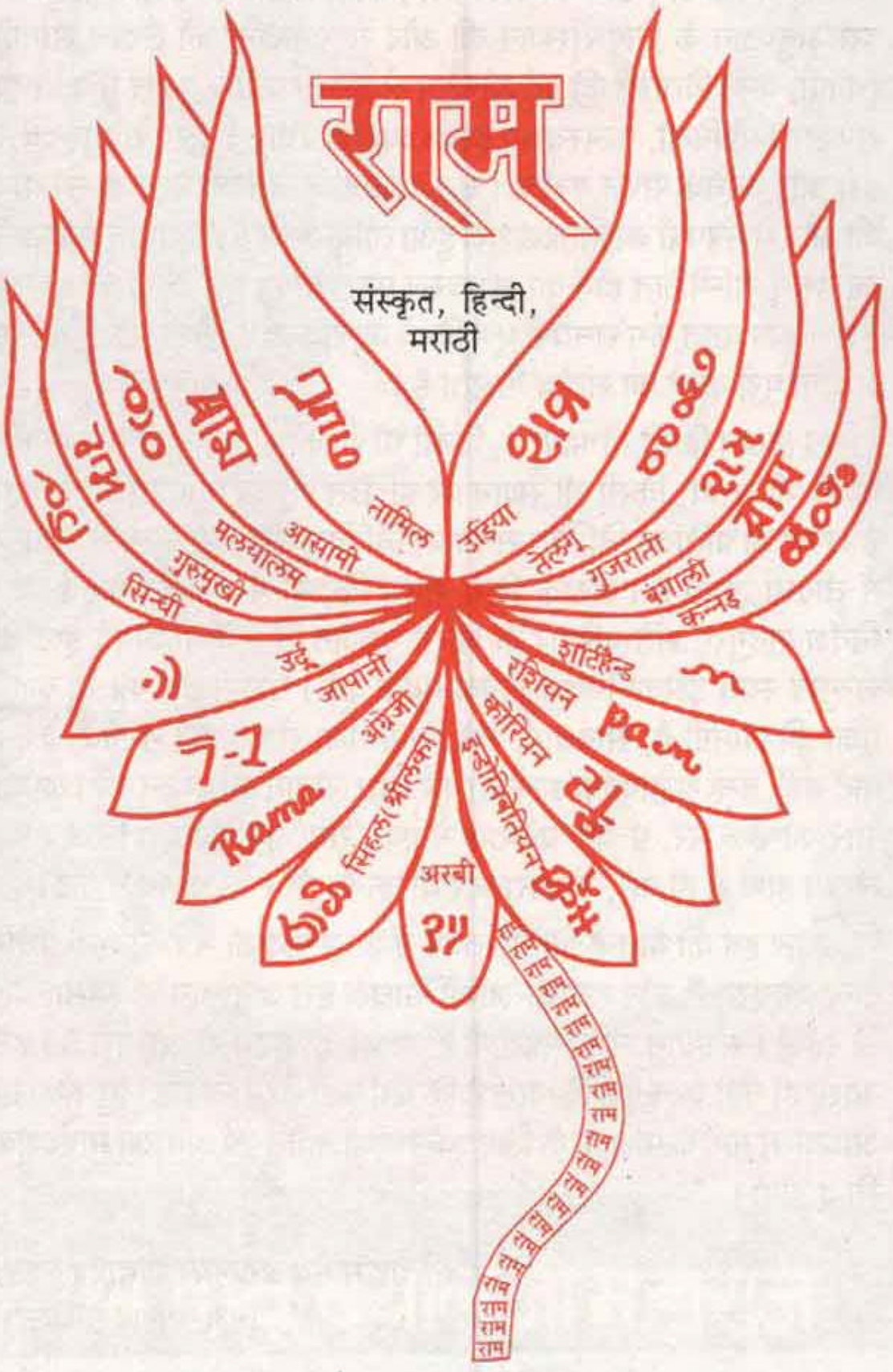

एक निवेदन

सद्गुरुदेव श्रीमद्दादूदयालजी महाराज की कृपावश 'राम' नाम महामंत्र लेखन-जप के अनुष्ठान का प्रारम्भ सन् **1991** के जनवरी मास से हुआ। इस अनुष्ठान के लिए संस्थान की ओर से भक्तजनों को लेखन सामग्री (कापी, पेन) वितरित की गई और मंत्र लेखन के प्रचार-प्रसार में कतिपय सफलता भी मिली, फलस्वरूप इसके व्यापक प्रचार के लिए सद्गुरुदेव ने इसे और अधिक सरल बनाया। सन् **1994** के जनवरी मास से संस्थान की ओर से मंत्रपत्रों का वितरण शुरू हुआ ताकि अधिक से अधिक भक्तजनों को इसमें सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त होवे। एक कापी की अपेक्षा एक मंत्रपत्र बहुत कम समय में पूर्ण किया जा सकता है और लेखक को एक साधना पूरी करने का संतोष मिलता है।

मंत्र लेखन किसी भी भाषा में, किसी भी रंग की स्याही या पेंसिल से भी, किसी भी समय, किसी भी स्थान पर इच्छित संख्या में किया जा सकता है। फिर भी प्रतिदिन निश्चित समय पर निश्चित संख्या में मंत्र लेखन करने से साधना में तीव्रता आती है। लेखक किस समय कितना मंत्र लेखन करे इसका निर्देश सद्गुरु, संत परिवार के किसी गुरुजन से लेवें या अपने इष्ट के सन्मुख स्वयं इसका निर्णय विवेक से करें। मंत्र लेखन पत्र या कापी पूजा की सामग्री है, सावधानी रखें कि वे यथा मैले न होवें,कटे-फटें नहीं। इन्हें श्रद्धापूर्वक अलंकृत कर शीघ्र लौटाने का प्रयत्न करें। कृपया सारे कोष्ठक भरें, प्रत्येक कोष्ठक में एक 'राम' पूरा का पूरा लिखें। मंत्र लेखन हाथ से ही करें, टाइपराइटर या कार्बन पेपर का प्रयोग न करें।

अपार हर्ष की बात है कि भारतवर्ष में आज हजारों मंत्र-लेखन-प्रचार केन्द्र कार्यरत हैं और हजारों-लाखों साधकइस अनुष्ठान से लाभान्वित हो रहे हैं। संस्थान सभी सहयोगी सज्जनों का हृदय से आभारी है। हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि लिखिता-जप पर यह लघु संकलन अध्यात्म मार्ग के पथिकों के लिए एक सर्वथा नवीन एवं अनोखा मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

-सीताराम मक्खनलाल पोद्दार (मुंबई)

(मूल-रामगढ़ शेखावाटी)

प्रकाशकीय

भगवान का नाम-स्मरण ही भगवत् तत्त्व के प्रकाश का सर्वोत्तम साधन माना जाता है। यद्यपि प्रभु का स्मरण नाना प्रकार से किया जाता है तथापि नाम जप द्वारा स्मरण किया जाना सर्व सुलभ एवं सरल प्रकार है। नाम जप के अनेक प्रकार हैं-नाम जप मनसा-वाचा-कर्मणा कर सकते हैं। चूंकि इस कलिकाल में मात्र मन से स्मरण या जप होना अधिक कठिन है, अतः उसमें वचन और कर्म को भी लगाते हैं। वाचिक जप से निश्चय ही मन नाम के द्वारा इष्ट के स्वरूप में रम जाता है। साथ ही जब लेखन कर्म द्वारा अन्य इन्द्रियों को भी इसमें संलग्न करते हैं तब यह अधिक उत्तम विधा बनती है। हाथ से वाणी करेन्द्रिय से लेखनी चलती है, चक्षु अर्थात् आंख रूपी इन्द्रिय से यह निरीक्षण होता रहता है कि आकार सुन्दर और स्पष्ट बन रहा है तथा यथायोग्य स्थान पर उचित आकार में अंकित हो रहा है, और मन से तो प्रभु चिन्तन होता ही है। जिस किसी भी नाम में हमें रुचि हो उसमें हमारे इष्ट हमारे इच्छित स्वरूप में रमते-विराजते रहते हैं। यथा -

'राम नाम में राम को सदा विराजित जान'

(स्वामी सत्यानन्दजी कृत 'अमृतवाणी' से)

नाम लेखन के समय मन से इस भाव का चिन्तन कि ''मेरा हृदय ही कोष्ठक है, और इसमें अपने इष्ट

स्वरूप को ही विराजित कर रहा हूँ`` वही इष्ट की हृदय से अर्चना है।

लेखन विधा से नाम जप द्वारा प्रभु से सम्पर्क स्थापित करना अति प्राचीन काल से चला आया है। पुराणों में वर्णन आता है कि पहले पहल जब वेदों द्वारा ईश्वर चिन्तन होता था - सब वेद मौखिक ही थे, परन्तु कालान्तर में जब वैदिक ऋचाएं भुलाई जाने लगीं तब वेदव्यास जी ने वेदों को लिपिबद्ध किया। यह उनके द्वारा किया गया सर्वप्रथम ईश्वर के नाम का लिखित जप था।

वेद ईश्वर का ही प्रगट रूप है। वेद की ऋचाओं के रूप में साक्षात् ईश्वर ने ही साकार रूप धारण किया है। ईश्वर के सगुण स्वरूप के चित्र तो काफी बाद में बने, सर्वप्रथम ईश्वर स्वरूप वेद की ऋचाओं की आकृति में लेखन किया गया। यह प्रथम आदि लेखन जप था। जिस लिखी हुई आकृति से हमको ईश्वर का स्मरण हो ऐसी आकृति बनाना, किसी भी भाषा-लिपि या नाम रूप में हो वह लिखकर नाम जप करना, मंत्र लेखन करना तथा इस प्रकार ईश्वर से, अपने इष्ट से सम्पर्क स्थापित करना ही लिखित नाम जप कहलायेगा।

पुराणों, सद्ग्रन्थों, वेद की ऋचाओं को लिखना, लिखकर उनका प्रचार करना, योग्य महानुभावों को समर्पण करना आदि का महान् महात्म्य है। पौराणिक कथा सुनने के बाद उसे हाथ से लिखकर व्यास पीठ पर विराजित वक्ता को समर्पित करना कथा श्रवण का एक आवश्यक अंग है। यह एक प्रकार का लिखित जप ही है।

यदि आप एक पुस्तक पढ़ें - एक बार-दो बार-चार बार पढ़ें तो हो सकता है कि आपकी कुशाग्र बुद्धि तथा तीक्ष्ण स्मरण शक्ति से कुछ अंश याद हो जाय, पर यदि आप एक पुस्तक लिखें तो निश्चय ही सम्पूर्ण पुस्तक आप को याद हो जाएगी। विद्यार्थी अवस्था में भी पाठ याद करने के लिए अध्यापक बार-बार पाठ को लिखवाता है। इस प्रकार सिद्ध होता है कि मात्र बोलने से या मन से विचार करने की अपेक्षा लिखना उत्तम है जिससे हृदय में भाव भलीभाँति अंकित हो जाता है और नाम जप का उद्देश्य भी तो भाव को हृदय में अंकित करना ही है।

अध्यात्म साधन की एक शाखा है - 'तंत्र उपासना'। इस उपासना में लिखित मंत्र जप का भारी महात्म्य है - जब मंत्र सिद्ध होने में कठिनाई हो रही हो या अधिक समय लग रहा हो तो तांत्रिक को लिखित जप का उपदेश दिया जाता है। शीघ्रतापूर्वक या अति कठिन कार्य सिद्धि के लिए लिखित जप या लेख साधना करनी पड़ती है। भोजपत्र, धरती या अन्य सतहों पर भिन्न-भिन्न स्याहियों एवं भिन्न-भिन्न लेखनियों के माध्यम से भिन्न-भिन्न भाषा एवं आकृति आदि के रूप में जो भिन्न-भिन्न मंत्र और नाना विधान लिखे जाते हैं, और जिनको सरलतापूर्वक समझने के लिए 'यन्त्र' नाम दिया जाता है, वह एक प्रकार का लिखित जप ही है।

अपने इष्ट की मूर्ति को तांत्रिक यन्त्र के रूप से अमुक संख्या में लेखन कर पूजा-स्थल पर इष्ट की मूर्ति के रूप में पूजा जाता है तथा गण्डा आदि बनाकर इष्ट साधन तथा कष्ट निवृत्ति के लिए शरीर आदि पर धारण किया जाता है।

आपके द्वारा भावपूर्वक लिखा गया मंत्र-पत्रक आपके इष्ट की ही मूर्ति है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे प्रत्यक्ष देवता ही हैं। इष्ट पूजन के पहले हम इष्ट की मूर्ति अंकित करते हैं। कुलदेवी का थापा, लक्ष्मीजी, सथिया, सूण आदि मांडते हैं, फिर उनको देव का प्रत्यक्ष स्वरूप मानकर भाव से पूजते हैं। इसी प्रकार यदि आप चाहें तो अपने द्वारा लिखित नाम पत्र को भी अपने इष्ट का साक्षात् श्रीविग्रह मानकर विश्वास पूर्वक इसके माध्यम से लौकिक एवं अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

आप चाहें तो मनौती भी मान सकते हैं - मेरा यह कार्य सिद्ध हो इसलिए मैं आज से इतना लाख मंत्र लिखूंगा। अवश्य कार्य सिद्ध होगा। लेखन संख्या पूर्ण होते-होते कार्य होना ही चाहिए। यदि समय कम हो तो भी आप यदि पूर्ण विश्वासी हैं तो लिखने के पूर्व भी फल प्राप्त कर सकते हैं केवल यह दृढ़ भावना रहे कि

मेरा यह कार्य पूर्ण होते ही इतने मंत्र अवश्य लिखूंगा। जिस तरह आप किसी देवता के दर्शन यात्रा की जात बोलते हैं या कड़ाही प्रसाद आदि की भावना करते हैं, ठीक उसी तरह कार्य सिद्धि के लिए अमुक संख्या में अमुक मंत्र के लिखित जाप की प्रतिज्ञा कीजिए। छोटी-छोटी सांसारिक बातों के लिए तो नाम लेखन है ही, लेकिन इसका असल महत्त्व तो परमार्थ में है। सच्चे भरोसे तथा पूरे निष्काम भाव से यदि मंत्र लेखन किया जा सके तो अल्प साधना से बहुत ही थोड़े समय में ही आपको अपने इष्ट स्वरूप का साक्षात्कार अवश्य होगा।

शारीरिक अस्वस्थता या अन्य कारणवश जो अधिक लेखन नहीं कर सकते ऐसे कई महानुभाव वांचन जप भी करते हैं। इष्ट मंत्र लिखे हुए या छपे हुए हों, उनका ध्यानपूर्वक वांचन भी नाम जप का एक उत्तम प्रकार माना जाता है। जिसमें मात्र 'राम' ही लिखा हो; ऐसी छपी हुई पुस्तकें बाजार में धार्मिक पुस्तक विक्रेताओं के यहाँ से मिलती हैं, नहीं तो स्व लिखित मंत्रवांचन भी उत्तम है। आनन्द रामायण के अनुसार - 'जपाच्छत गुणं पुण्यं राम नाम प्रलेखने' अर्थात् लिखित जप वाचिक जप से सौ गुना अधिक प्रभावी माना जाता है। लोकभाषा में भी कहावत है -'सौ जख्या, एक लिख्या' अर्थात् सौ बार बोलना और एक बार लिखना दोनों बराबर हैं। बृहन्नारदीय पुराण के अनुसार -

स्मरणात् कीर्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखनादपि।
दर्शना द्धारणादेव रामनामाखिलेष्टदम्॥

श्री राम नाम का स्मरण, कीर्तन, दर्शन, ध्यान और लेखन अवश्य ही सब अभीष्टों को प्रदान करने वाला है।

नारद पुराण में भी प्रतिपादित किया गया है कि अपने स्वयं के लिखे हुए नाम मंत्र को बार-बार पढ़ना भी उत्तम प्रकार का जप है। इसी प्रकार अन्यों द्वारा लिखित राम-नाम पढ़ना, उसमें रही हुई कोई त्रुटि या खाली रहे हुए कोष्ठक पूर्ति करना, उनको सजाना, संवारना तथा यथास्थान प्रतिष्ठित करने की कार्यवाही में सहभागी होना भी बहुत उत्तम सेवा है। शास्त्र का आदेश है कि अपने द्वारा निर्मित देवालय, जलाशय, तीर्थस्थानादि (यहाँ राम-नाम पत्रक को देवालय के रूप में ग्रहण करें) को सजाना, संवारना जीर्णोद्धार करना या करवाना अथवा खंडित या जीर्ण प्रतिमा आदि का लेपन क्रिया द्वारा संपादित करना नये देवालय के निर्माण से भी **100** गुना अधिक उत्तम है।

वर्तमान में मिले लिखिता जप साधना-महिमा के कुछ प्रत्यक्ष प्रमाण-

1) लिखिता जप साधक को मानसिक शांति एवं आनन्द का अनुभव हुआ और उन्हें गृह-क्लेश के संकट से मुक्ति मिली।

2) राम नाम लिखने वाले विद्यार्थी अपने फालतू समय का सदुपयोग करना सीखे एवं अध्ययन में उनकी एकाग्रता बढ़ी।

3) रोगियों को स्वास्थ्य लाभ हुआ।

4) जेल के कैदी सात्विक बनकर परमार्थ पथ के पथिक बने।

5) वयोवृद्ध जन राम नाम महामंत्र के लिखने-लिखवाने में संलग्न होकर उकताए हुए जीवन में नवीन हर्ष एवं उल्लास का अनुभव करने लगे।

6) राम नाम लेखन से भगवत् कृपावश विवेक की जागृति हुई और परम पावन भारत भूमि पर अवतरित ऋषि-मुनियों की वाणी पर हमारी श्रद्धा होने लगी।

राम नाम लेखन के बारे में श्रद्धेय संतों, शास्त्रों, सद्ग्रन्थों, सद्संस्थानों तथा साधकों द्वारा उपलब्ध कुछ

सूचनाएं वहाँ अंकित की हैं। प्रार्थना है कि उनका ध्यानपूर्वक अध्ययन और मनन करें तथा कार्यरूप में परिणत करते हुए राम नाम लेखन यज्ञ में आहुति देवें। फल अपार है। सभी इष्ट कार्य सम्पन्न होंगे।

// श्रीराम नाम लेखन की महिमामयी आरती //

आरति राम नाम की कीजै। आरति राम नाम की कीजै॥
राम नाम हिरदय लिख लीजै। दुःख दारिद्र्य दुःसह सब छीजै॥ आ...
लिखिय लिखाइय सुनिय सुनाइय। लखिये ललित ललाम लफ़ीजे॥ आ...
जपिय जपाइय गाइय गवाइय। ललित ललाम लफ़ीजे लिखीजे॥ आ...
परम प्रेममय मृदु मसि कीजै। चारु चित्त भीती चितरीजै॥ आ...
हनुमत नाम लिख्यो उर भावो। फारि सभा में हृदय दिखावो। आ...
गणपति नाम लिख्यो देइ फेरी। प्रथम पूज्य भये बिघन निबेरी॥ आ...
पाटी पर लिखि राम प्रसादू। अगत शिरोमणि भये प्रहलादू॥ आ...
ध्वज पर नाम लिख्यो सुग्रीवा। पायो कपि पति पद सुख सींवा॥ आ...
लिख्यो द्वार पर नाम विभीषण। लही लंक राक्षस कुलभूषण॥ आ...
बेलपाति धुन खाय राम लिखि। अरपि शंभु हरि है गए सिरिपति॥ आ...
लिखतेहि राम जुतरे पषाणा। लिखि व्यास जु रचे पुराणा॥ आ...
राम राम लिखि गुरुदइ ढिबिया। शिष्य नाव बिनु तिरि गए नदिया॥ आ...
राम धुनाक्षर न्याय हुं लिखते। कीट मुक्त होइ सुर पुर रमते॥ आ...
राम नाम अंकित अति सुन्दर। मुंदरि लइ कपि लंघेऊं समुन्दर॥ आ...
राम राम शुभ सुन्दर रामा। लिखिये राम राम सुख धामा॥ आ...
लिखत लिखत कलि कल्मष छीजै। राम राम रति रस मन भीजै॥ आ...
लिखि लिखि लखि लिखि लिखै लिखन्ता।
किलि किलि किलि किलि खिलै हनुमन्ता॥ आ...
रं रं रं रं कार रमन्ता। रम रम रम रम राम लिखन्ता॥ आ...
राम राम जो लिखै लिखावै। पूरण सकल मनोरथ पावै॥ आ...
सद्गुरु दादूदयालजी स्वामी। करै उपदेश लिखै अनुगामी॥ आ...
आरति राम नाम जो गावै। श्रीसद्गुरुवर ज्ञान प्रकाशै॥ आ...
राम नाम रस पीजै साधो, राम नाम लिख लीजै

नाम-चितावणी

एक राम के नाम बिन, जीव की जलन न जाय।
दादू केते पच मुए, करि-करि बहुत उपाय॥
छिन-छिन राम संभालतां, जे जिव जाय तो जाय।
आतम के आधार को, नाहीं आन उपाय॥
(श्री दादूवाणी - सुमिरण को अंग)

राम नाम जपने की बड़ी महिमा है पर लिखने की महिमा विशेष है क्योंकि लिखने से एकाग्रता होती है और

राम नाम में एकाग्रता ही चाहिए...

-ब्रह्मलीन दादूपीठाचार्य श्री श्री **1008** श्री हरीरामजी महाराज, नारायना, राजस्थान।

आत्मिक यज्ञ

'राम' नाम का लेखन जीवन का एक महान् आत्मिक 'यज्ञ' है। यज्ञ में जितनी आहुतियां लगेंगी उतना ही वह परिपूर्ण व सफल होगा।

मनुष्य जीवन की सार्थकता चित्तवृत्ति का स्थैर्य 'राम' नाम लेखन से ही संभव है। चित्तवृत्ति को स्थिर करने व 'राम' को प्राप्त करने का साधन निरन्तर 'राम' नाम लेखन ही है।

-स्वामी श्री कनीरामजी दादूपंथी

अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री दादूदयाल महासभा प्रन्यास, जयपुर, राजस्थान।

कलिकाल में नाम लेखन ही

इस कलिकाल में केवल राम का नाम ही एकमात्र संसार से पार करनेवाला है। अतः साधक को नाम स्मरण करना चाहिए और स्मरण की अपेक्षा राम-नाम लिखना और भी अधिक महत्त्व रखता है क्योंकि लिखने से मन, बुद्धि, इन्द्रिय आदि सब अपनी चंचलता को त्याग कर स्थिर हो जाते हैं।

-महामण्डलेश्वर स्वामी श्री आत्मारामजी महाराज (व्याकरण वेदान्ताचार्य),

श्री दादूद्वारा, बगड़, जि. झुंझनूं-**333023**,(राजस्थान)।

राम नाम लेखन विस्तार

वृद्धि आस्तिक राम की, शुभ मंगल संचार।
राम नाम का लेख कर, सब मिल करो विस्तार।।

'राम नाम लेखन महत्त्व'-तन, मन की राम में एकाग्रता से ही भगवत् आनन्द की प्राप्ति होती है। इसका सरल साधन है राम नाम लेखन। जब आप राम का नाम मन में लेवेंगे, इसके साथ ही तन (हाथ) से राम का नाम लिखना प्रारंभ करेंगे तभी तन-मन की एकाग्रता राम में स्वतः ही होने लगेगी। इस कार्य को जितना ज्यादा करोगे उतनी ही परमानन्द की प्राप्ति होगी।

-स्वामी श्री रामसुखदासजी,

अध्यक्ष - राष्ट्रीय पर्यावरण संघ रक्षक समिति, ढहर के बालाजी, जयपुर

राम नाम निज सार

मन के महत्व का उल्लेख करते हुए शास्त्रों में कहा गया है - मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः। अर्थात् मन ही मनुष्य के बन्धन मोक्ष का कारण है। मन के स्वरूप-विश्लेषण के सम्बन्ध में शास्त्र का मत है कि ``संकल्प-विकल्पनात्मकं मनः`` अर्थात् संकल्प विकल्प का होना ही मन का स्वरूप है। हमारे ऋषि-

-मुनिवों ने सृष्टि के आरंभ के विषय में अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रारंभ में परमात्मा ने संकल्प किया ''एकोहं बहुस्याम्'' अर्थात् मैं एक हूँ बहुत हो जाऊं। परमात्मा के इसी संकल्प से सृष्टि का निर्माण हुआ। इस बात से स्पष्ट है कि परमात्मा के मानसिक संकल्प का परिणाम ही यह सृष्टि है। वस्तुतः जीव साक्षात् ब्रह्म ही है - ''जीवो ब्रह्मैव ना परः'' किन्तु इस मन के कारण ही अर्थात्-संकल्प विकल्प के कारण ही जीव अपने को अल्पज्ञ और बन्धन मुक्त समझता है। जब संकल्प और विकल्प का होना बंद हो जाता है तो निश्चित ही मन की स्थिति समाप्त हो जाती है। मन की स्थिति समाप्त होने पर एकमेवा द्वितीय ब्रह्म, अर्थात् एक अद्वितीय ब्रह्म ही रह जाता है जिसका स्वरूप अखण्ड आनन्द है।

अब प्रश्न यह उठता है कि संकल्प विकल्प का होना कैसे बन्द हो ? दूसरे शब्दों में मन को वश करने के उपाय क्या हो सकते हैं ? वैसे तो शास्त्रों में मन को वश करने के अनेक उपाय बताये गये हैं परन्तु दादूजी महाराज ने मन को वश करने का एक मात्र उपाय बताते हुए कहा है :-

कोटि यत्न कर कर मुये, यहु मन दह दिश जाय।
राम नाम रोक्या रहे, नांहीं आन उपाय।
(श्री दादूवाणी-सुमिरण को अंग)

अर्थात् सांसारिक प्राणी इस मन को वश में करने के लिए हजारों प्रयत्न कर करके मर गये किन्तु मन को दशों दिशाओं में जाना नहीं रुका अर्थात् किसी भी प्रयत्न से मन वश में नहीं हुआ। मन को रोकने का एक मात्र उपाय राम नाम का स्मरण करना ही है, इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है। अतः मन को वश में करने के लिए नाम का स्मरण करना चाहिए।

मन को वश में करने के लिए नाम स्मरण की अनिवार्यता हमारे समक्ष स्पष्ट हो गई परन्तु नाम स्मरण की विधि और उसका स्वरूप किस प्रकार से जाना जा सकता है ? इस सम्बन्ध में दादूजी महाराज का कथन है :-

नाम लिया तब जाणिये, जे तन मन रहे समाय।
आदि अंत मध्य एक रस, कबहू भूलि न जाय।।
(श्री दादूवाणी-सुमिरण को अंग)

अर्थात् अमुक व्यक्ति ने नाम स्मरण किया है इस बात का ज्ञान तब होगा जब स्मरण करने वाले के शरीर के रोम-रोम में तथा मन की प्रत्येक स्थिति में नाम समा जाय, अर्थात् पूर्णतः घुलमिल जाय और वह कभी भी नाम का विस्मरण न करे, अखण्डाकार वृत्ति द्वारा निरन्तर नाम स्मरण करता रहे।

प्राचीन काल में प्रायः सभी शास्त्रों एवं संत वाणियों में स्मरण की महिमा का प्रबल स्वरों में बखान किया गया है। परन्तु नाम स्मरण के मार्ग में उपस्थित होने वाले अन्तरायों से भी मुक्ति पाना आवश्यक है। साधक जब नाम स्मरण के लिए प्रयत्नशील होता है तब इस संकल्प विकल्पात्मक मन में अनेक कल्पनाएं उद्भूत होने लगती हैं और मन एकाग्र नहीं हो पाता। एकाग्रता के अभाव में नाम स्मरण का वांछित लाभ नहीं मिल पाता। अतः नाम स्मरण में एकाग्रता समावेश करने की सबसे सरल और अचूक विधि है लेखन।

भूतकाल में तकनीकी कला का विकास न होने के कारण लेखन सामग्री का अभाव था। आज उत्तरोत्तर होने वाली वैज्ञानिक उपलब्धियों ने जन साधारण को लेखन सामग्री प्रचुर मात्रा में प्रदान की है। प्रत्येक कला की दिव्यता अनुभव करने के लिए उसे परमात्मा को समर्पित करना आवश्यक है, इसलिए साधक को नाम लेखन का सतत अभ्यास करना चाहिए। नाम लेखन के निरन्तर अभ्यास से राम नाम के स्मरण में शनैः शनैः स्वतः एकाग्रता का समावेश होने लगता है। कुछ समय तक नाम लेखन के अभ्यास से साधक को त्राटक, ध्यान, एवं प्राणायाम आदि के साधन में भी सहज रूप से बिना प्रयास किये ही सफलता

उपलब्ध होने लगती है।

1) धारणा - लिखित जप में मन, जिह्वा, हाथ और नेत्र सभी अवयव मन्त्र साधना में संलग्न होने के कारण विक्षेप का अभाव है। विक्षेप के अभाव में धारणाशक्ति का विकास होकर कार्य में निपुणता आती है।

2) नियन्त्रण - लिखित जप से मनोनिग्रह होता है जिससे मन किसी भी कार्य में पूर्ण समाहित होकर प्रवृत्त होता है।

3) प्रगति - बार-बार मंत्र लेखन से चित्त में सूक्ष्म आध्यात्मिक संस्कारों का निर्माण होता है जिससे आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है।

4) शान्ति - एक ही विषय पर केन्द्रित होने के कारण मन का भटकाव रुक जाता है और अपूर्व शान्ति का अनुभव होने लगता है।

5) शक्ति - जिस स्थान पर बैठकर साधक मंत्र लेखन का कार्य करता है, उस स्थान पर आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण हो जाता है। जिससे साधक आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति प्राप्त करने में समर्थ होता है।

अतः साधक को शीघ्र ही नाम स्मरण का पूरा लाभ प्राप्त करने के लिए मंत्र (नाम) लेखन प्रारंभ कर देना चाहिए।

-महन्त बजरंगदास स्वामी, प्राचार्य - श्री दादू महाविद्यालय, जयपुर

लिखिता-जप का शास्त्रीय आधार

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथ नाथाय श्री सीतायाः पतये नमः॥

राम सम्पूर्ण वेदों का सार है। अर्थात `र` ऋग्वेद `आ` आहुति परक यजुर्वेद का, `म` मधुर होने के कारण सामदेव का और `अ` अथर्ववेद का सारांश है, इसीलिए रामचरितमानस में तुलसीदासजी ने कहा -

एहिं महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।

राम नाम के जप एवं लेख दोनों का विधान है। जो महानुभाव जप कर सकते हैं वो जप करें और जिनका चित्त बहिर्मुख है, जिनका जप में मन नहीं लगता, जिनकी आंखें चंचल हैं उनके लिए शास्त्रों में राम-नाम के लेख का विधान है, और लिखने से धीरे-धीरे मन और नयन दोनों पवित्र हो जाते हैं। गोस्वामीजी ने राम नाम की वन्दना का प्रारम्भ करते हुए जप के साथ-साथ लेख की बात भी कही है -

एकु छतु एकु मुकुटमनि, सब बरनन पर जोउ।
तुलसी रघुबर नाम के, बरन बिराजत दोउ॥

अक्षर और वर्ण में यही अन्तर है, अक्षर का उच्चारण होता है और वर्ण का लेखन होता है। गोस्वामीजी राम नाम में अक्षर भी मानते हैं वर्ण भी मानते हैं। रामचरित मानस का प्रारम्भ वर्ण से करते हैं -

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ॥

राम नाम के आकार की प्रशंसा भी गोस्वामीजी करते हैं -

आखर मधुर मनोहर दोऊ। बरन बिलोचन जन जिय जोऊ॥

अर्थात राम नाम दोनों अक्षर भी हैं वर्ण भी हैं। जप के लिए अक्षर हैं और लेखन के लिए वर्ण हैं। शास्त्रों में तो

यहां तक कहा है -

यन्नाम वर्णद्वयमादनेन नष्टस्वरो गन्तुमितो स्वराणाम्।
तद्राम वर्णो हृदयं धारयन् वैदेही कथं नैव व्रजेथ्यो मुक्तिम्॥

अर्थात जिस राम नाम के दोनों अक्षरों को हम हृदय में धारण कर लेते हैं वे स्वर न होने पर भी ऊपर हो जाते हैं। जैसे 'र' में से स्वर निकाल दो तो भी 'र' ऊपर ही रहता है जैसे 'अपूर्व' और 'म' में से हलाकार निकाल दो तो भी वह अनुस्वार बन के ऊपर ही रहता है। राम नाम के दोनों अक्षर कभी नीचे आते ही नहीं ऊपर ही बने रहते हैं। यदि स्वर विहीन होकर भी राम नाम के 'र' कार और 'म' कार दोनों ऊपर ही बने रहते हैं तो उस राम नाम का लेखन और वांचन करता हुआ व्यक्ति ऊपर क्यों नहीं चला जायेगा। अर्थात राम नाम का लेख और जाप दोनों ही अंश महत्त्वपूर्ण हैं। बहिर्मुखवृत्तिवाले महानुभावों को चाहिए राम नाम का लेखन करें और राम मंत्र का लेखन करें। इससे उनका एहिलौकिक और पारलौकिक दोनों कल्याण होगा।

राम नाम के लेख एवं राममंत्र के लेख में भिन्नता

राम नाम तो 'र' कार और 'म' कार हैं और राम मंत्र षड़ाक्षर का लेख है। शास्त्रों में दोनों की अलग-अलग महिमा है। राम नाम तो महामंत्र है वह सबके लिए होता है। और राम मंत्र है उसे राम नाम में बीज और चतुर्थ्यंत और नमस्कार को योग कर राममंत्र बनता है। सबसे पहले राम मंत्र की अनुभूति जगज्जननी भगवती सीताजी को हुई थी और राम मंत्र सीताजी ने हनुमानजी महाराज को बताया अशोक वाटिका में। फिर हनुमानजी महाराज ने वही राममंत्र ब्रह्माजी को, ब्रह्माजी ने वशिष्ठजी को, वशिष्ठजी ने शक्ति को, शक्ति ने पाराशर को, पाराशर ने वेदव्यास को, वेदव्यास ने शुकाचार्य को, और शुकाचार्य ने पुरूषोत्तमाचार्य को और उन्होंने राघवानन्दाचार्यजी को और इस प्रकार आदि रामानन्दाचार्य को। इस प्रकार परम्परा को प्राप्त होते-होते, जिस गद्दी पर वर्तमान में मैं हूं रामानन्दाचार्य, यहां तक वो आया। अर्थात राम मंत्र की सबसे बड़ी आचार्य सीताजी हैं और सबसे अन्तिम आचार्य आद्यरामानन्दाचार्य हैं। इसे कहा जाता है 'श्री सीतानाथ समारंभाम् श्री रामानन्दाय मध्यमाम् अस्मदाचार्य पर्यन्ताम् वन्दे श्रीगुरूपरम्पराम्'। राममंत्र का इतना महत्त्व है कि एक-एक अक्षर पर गोस्वामी तुलसीदासजी ने एक-एक काण्ड की रचना की है और अन्त में जो विसर्ग आया उसी विसर्ग के आधार पर उत्तरकाण्ड की रचना की...

तेन तप्तं हुतं दत्तमेवाखिलं, तेन सर्वंकृतं कर्मजालं।
येन श्रीरामनामामृतं पान कृतमनिशमनवद्यमवलोक्य कालं॥
(श्री विनय पत्रिका पद सं - 46/8)

विनय पत्रिका में गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं उस व्यक्ति ने तपस्या किए बिना भी सब तपस्याएं कर ली, दान दिए बिना भी सम्पूर्ण कर्म कर लिया जो निरन्तर रामनामामृत का पान करता है। राम नाम का लेखन और जापन करने से तप, दान, कर्म, संसार के सभी शुभ-कर्म अपने आप सम्पन्न होते हैं।

-परमपूज्य जगद्गुरू श्री रामानन्दाचार्य स्वामी, श्री श्री १००८ रामभद्राचार्यजी महाराज

लिखित-जप

भगवन्नाम जप तथा कीर्तन के समान ही भगवन्नाम का लिखित जप करने की प्रणाली भी बहुत प्राचीन है। यह प्रणाली कब और कैसे चली, पता नहीं; किंतु चली यह संतों की परम्परा से और इसमें कोई संदेह नही कि जप की यह अत्यन्त प्रभावशाली प्रणाली है। साधारण मनुष्य का मन जप में लगा रहे, इसके लिए लिखित जप ही सबसे सुगम उपाय है।

जप के विषय में शास्त्र तथा संत सभी मानते हैं कि वाचिक (वाणी से बोलकर) जप की अपेक्षा उपांश

(केवल ओष्ठ एवं जिह्वा हिलाते) जप करना उत्तम है। उपांशु जप से भी मानसिक जप करना श्रेष्ठ है। मानसिक जप के भी कई भेद हैं और वे उत्तरोत्तर उत्तम माने जाते हैं। श्वास के साथ नाम या मन्त्र के उच्चारण की भावना, नाड़ी की गति के साथ नामोच्चारण की भावना तथा नाम या मंत्र का मन द्वारा ठीक उसी प्रकार सोचना जैसे दूसरी सांसारिक बातें हम सोचते हैं, यह सब मानसिक जप के भेद हैं।

मन केवल भगवन्नाम ही सोचे, सामान्य व्यक्ति के लिए कुछ मिनट भी ऐसा कर पाना कठिन है। उपांशु तथा वाचिक जप के समय भी मन इधर-उधर चला जाता है। इसीलिए जप की अपेक्षा संकीर्तन उत्तम माना गया है। लेकिन, संकीर्तन देर तक नहीं चल सकता; और संकीर्तन के समय भी मन इधर-उधर न जाता हो, ऐसी कोई बात नहीं है।

इन सब बातों को देखते हुए संतों ने लिखित जप की प्रणाली प्रचलित की। यदि आप भगवन्नाम-लेखन के नियमों का पालन करते हैं तो यह संभव ही नहीं है कि नाम-लेखन काल में मन इधर-उधर भटक सके। मनोनिग्रह का यह बहुत सुगम साधन है। इसीलिए लिखित जप दूसरे सब जपों से श्रेष्ठ माना जाता है।

प्रायः लिखित जप की प्रेरणा देनेवाले जितने लोग एवं संस्थाएं हैं, वे सब लगभग एक जैसे नियमों का ही आश्रय लेते हैं। अतः नाम-लेखन के नियमों में कदाचित् ही अन्तर पाया जाता हो।

इसका कोई नियम नहीं है कि प्रतिदिन कितना नाम लिखा जाय। इसका भी कोई नियम नहीं है कि एक दिन में एक ही बार नाम लिखा जाय। मैं एक रेल्वे गार्ड की यह बात जानता हूँ कि जब वे अपने कार्य पर होते हैं, तब ट्रेन के अन्तिम सिग्नल से बाहर निकल जाने पर भगवन्नाम लिखने लग जाते हैं और दूसरे स्टेशन का बाहरी सिग्नल आने तक नाम-लेखन में लगे रहते हैं।

लिखित नामों का क्या करें ?

यह प्रश्न प्रायः पूछा जाता है। प्रत्येक नाम-लेखन करने वाले के सम्मुख यह समस्या आती है। सबसे पुरानी प्रथा यह है कि लिखे हुए नामों से एक-एक नाम को पृथक्-पृथक् काटकर उन्हें आटे की गोली में बनाकर वे गोलियाँ मछलियों को खिला दिया करते थे। अब भी बहुत-से लोग ऐसा करते हैं। लेकिन, इस प्रकार करना उचित नहीं लगता; क्योंकि कागज मछलियों के पेट में जाकर संभवतः उन्हें हानि कर सकता है।

गुजरात के प्रसिद्ध संत एवं कथावाचक दिवंगत श्री पुनीतजी महाराज ने बहुत अधिक भगवन्नाम-लेखन कराया और एक बहुत बड़ी संख्या में इन लिखित भगवन्नामों को समारोहपूर्वक श्रीनर्मदाजी में विसर्जित किया। यह घटना कुछ ही वर्ष पूर्व की है।

कुछ संस्थाएं लिखित भगवन्नाम अपने यहाँ सुरक्षित रखती हैं। उनके यहाँ लिखित नामों की पूजा-प्रदक्षिणा होती है। ऐसी कोई संस्था आपके द्वारा लिखित नाम रख लेना स्वीकार कर ले तो पहले उस संस्था के कार्यकर्ताओं से पत्र द्वारा अनुमति लेकर अपने लिखित नाम वहाँ भेज सकते हैं।

वाराणसी में ही 'ॐ नमः शिवाय' बैंक भी है और वह संस्था शिवपञ्चाक्षर-मंत्र के लेखन का प्रचार करती है। अयोध्या के कुछ स्थानों से 'सीताराम' इस नाम के लेखन का प्रचार किया जाता है। कुछ संस्थाएं 'राम' केवल इतना नाम अथवा 'श्रीराम जय राम जय जयराम' के लेखन का प्रचार करती हैं। गायत्री मंत्र के लेखन का प्रचार भी चलता है और मथुरा की 'गायत्री तपोभूमि' में लिखित गायत्री मंत्र एक बड़ी संख्या में संग्रहित भी हैं।

पचीस-तीस वर्ष पूर्व पशुपतिनाथ (नेपाल) में बड़ी संख्या में लिखित राम-नाम की स्थापना करके उस पर एक स्तूप बना दिया गया था। उसकी पूजा तथा परिक्रमा होती है। दक्षिण अफ्रिका के युगाण्डा, नैरोबी जैसी क्षेत्रों में गुजराती संत 'बापाजी' ने कई स्थानों पर सवा अरब लिखित राम-नाम की स्थापना करके 'राम-नाम-मन्दिर' बनवाये हैं।

कलकत्ता के `अखण्ड हरिनाम संकीर्तन भवन` लोहाघाट में लिखित नामों का बड़ा संग्रह प्रतिष्ठित है और उसकी पूजा होती है।

मानस संघ, रामवन (सतना म.प्र.) के रामनाम मंदिर में लगभग डेढ़ अरब लिखित राम-नाम संग्रहित हैं। इस मन्दिर की लोग परिक्रमा करते हैं। वह संस्था निष्काम भाव से लिखे गये `राम` इस नाम को ही अपने वहाँ रखना स्वीकार करती है।

-श्री सुदर्शन सिंह जी

गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित पत्रिका `कल्याण` से साभार

राम नाम लेखन से प्रभु-दर्शन

प्र. : महाराज जी। एक प्रार्थना करनी थी राम-नाम-लेखन महिमा के बारे में, नाम लेखन की क्या महिमा है, जैसे लिखकर जो जप किया जाता है राम, राम, राम, राम जो लिखते हैं, तो लिखते लिखते जो जप होता है उसके बारे में कुछ विशेष महिमा, आप कुछ बताइये।

उ : क्योंकि लिखने से मन एकाग्रचित्त होता है इसलिए लिखावट है। मंत्र जप तो है ही पर... मंत्र जप तो बड़ी बात है, लेकिन मन भी एकाग्र चित्त हो इसलिए लिखावट है जैसे बच्चे को याद कराना हो तो स्लेट पर लिखाते हैं, दस बार लिखेंगे तो जल्दी याद होगा, वह अन्दर जाकर उतर जाता है। राम, सीता, राम लिखने से अभी ऐसे ही केवल ध्यान करेंगे तो उनकी छवि का ध्यान तो-मन हो न हो लेकिन लिखेंगे तो ध्यान का कुछ अंश जरूर बढ़ता है...

प्र. : महाराजजी ऐसे लिखते-लिखते किसी को दर्शन भी होता होगा ?

उ : बिल्कुल होता ही है, होवे ही, चित्त लग गया तो हो ही जावे।

प्र. : महाराजजी जो किताब के अन्दर कोठा है, पेपर में जो कोठा बनाया गया है, वही अपने प्रभु का मंदिर है और हम जो राम का नाम लिखते हैं, वही अपने प्रभु का मंदिर है और हम जो राम का नाम लिखते हैं, प्रभु की मूर्ति अलंकृत करते हैं और उनका वहाँ पर शृंगार करते हैं, पूजा करते हैं, इस भावना से लिखना चाहिए ?

उ. : हां।

-श्री रामबालकदासजी महाराज,

Auto writing Transmedium Seance dated: 03/05/97

ध्यान से नाम लेखन या लेखन से ध्यान

आत्मलीन श्री रामबालकदासजी महाराज द्वारा **Trancendential Medium** से हो रहे सत्संग में एक साधक ने पूछा कि `महाराज जी, कभी-कभी ऐसी स्थिति होती है कि बार-बार प्रयत्न करने पर भी न तो ध्यान होता है न **Astral Travelling** आदि का अनुभव होता है, ऐसी स्थिति में क्या करें ?` श्री महाराज जी- `राम नाम लेखन का ध्यान करो।` सभी उपस्थित जिज्ञासु महाराज जी के इस उत्तर से काफी विस्मय को प्राप्त हुए, किसी के कुछ समझ में नहीं आया, अतः फिर से पूछा कि - `महाराज जी, कुछ, **Practical** करवाइये - हम तो कुछ समझे नहीं।`

श्री महाराजजी - `ठीक है, तो फिर सब आंखें बन्द कर लो।`

सभी आंखें बंद करते हैं और कहते हैं - `हां, महाराज जी, आंखें बंद कर ली।`

श्री म.- क्या दिखता है ? उत्तर- `कुछ नहीं, मात्र अंधकार है।`

श्री म.- `बहुत अच्छा- अब इस श्याम रंग के मध्य में श्वेत गोरोचन का एक बड़ासा गोलाकार वृत्त बनाओ- जैसा तुम सलूने पर सूण मांडने के लिए दीवार पर सफेद पोता लगाते हो।` श्रोता - `हां, महाराज जी, हो गया।`

श्री. म.- `तो अब इस गोलाकार के बीच में चटक पीले रंग का थोड़ा छोटा गोला और बनाओ- इस प्रकार बनाओ की सफेद रंग की बोर्डर बराबर चौड़ाई की दिखे।`

श्रोता - `हां,महाराज जी-बनाया-अब बराबर दिख रहा है।`

श्री.म.- `अब इस पीले गोलाकार के मध्य में चटक लाल रंग का बड़ासा राम ऐसा नाम लिखो, जैसा सूण मांडने के समय तुम लोग लिखते हो। लिखा गया न ?`

श्रोता - `हां, महाराज जी।`

श्री म.- `अब थोड़ी देर इस चटक रंग के लाल `राम` नाम को ध्यान से देखो। देखो इसमें चारों तरफ छोटी-छोटी प्रकाश की किरणें फूट रही हैं।`

श्रोता - `हां, हां, हां, महाराज जी।` (सभी खुशी से उल्लसित हुए कहते हैं ।)

श्री म.-`अब देखो वे किरणें थोड़ी-थोड़ी देर में जलते-बुझते बिजली के लट्टू के प्रकाश की तरह झबक रही हैं।` सभी खुशी से हां, हां कहते हैं।

श्री म.-`अब इस दृश्य को कुछ समय के लिए देखो, और फिर इसी तरह एक और दुरंगा गोलाकार बनाकर उसमें `राम` लिख कर उसमें भी प्रकाश झबुकने का दर्शन करो- दोनों `राम` एक साथ चमकते हुए का ध्यान करो।` सभी जी..जी

श्री म. - `अब एक तीसरा `राम` लिखो फिर चौथा पांचवां लिखते ही जाओ - आगे की सारी दीवार को स्वयं प्रकाशित होते हुए भी झबकते हुए `राम राम राम` से भर दो।

सभी चिल्लाते हैं - `हां, हां वह तो अनायास ही हो गया।`

श्री म. - `बहुत खूब ! अब तुम्हारे सामने सर्वत्र मात्र `राम` ही `राम` लिखे हैं तथा वे सब नाम पवित्र प्रकाश से झबुक रहे हैं।` सभी - `हां..हां`

श्री म.- अब थोड़ी देर इसी का अभ्यास करो।

श्री म.- (थोड़ी देर के बाद) `अब अपनी दाहिनी तरफ भी इसी तरह पूरी दीवार `राम`, `राम` से भर दो। फिर बाई दीवार को भी चमकते हुए `राम,राम` से परिपूर्ण कर दो।` सभी खुशी से चिल्लाते हैं - `हां, हां, वह तो अपने आप ही हो गया।`

श्री म.- `अब देखो तुम्हारे सामने आगे-पीछे, दायें-बायें, ऊपर-नीचे सर्वत्र `राम, राम` ही चमक रहे हैं। तुम इनमें डूब रहे हो, उतर रहे हो। जैसे आजकल छोटे-छोटे बालक Balloon Pool फुब्बों के कुंड में खेल कर खुश होते हैं। इन राम राम के गोलों से खेलो, इनका आनन्द लो, इनको छुओ, इनको पकड़ो, इनको मसलो, भले ही पैरों के नीचे आने दो, कोई दोष नहीं लगेगा मेरी गारंटी है। इनसे खूब खेलो और खुशी आनन्द प्राप्त करो। सम्पूर्ण ध्यान का फल आनन्द ही है। ज्यों-ज्यों तुम इस राम-राम के सागर में खेलोगे-आनन्द करोगे, त्यों-त्यों आपका इष्ट स्वरूप (भले ही वह रामसीता का हो, राधाकृष्ण का हो या गुरुदेव का हो या किसीभी देवता का हो) प्रकट होने लगेगा। प्रभु का ध्यान स्वरूप मात्र आनन्दमय होता है उसमें अन्य कोई तत्व नहीं होता - यदि लगन से ध्यान किया तो तुम्हारा इष्ट स्वरूप तुम्हें जरूर दिखेगा - फिर चाहो तो उसके साथ खेलो, हंसी-मजाक करो, उसकी सेवा स्तुति करो, या अर्चना-पूजा-आरती करो, भोग लगावो और खुद भी पावो और अपने सब साथियों को और हमको भी (यानि श्री महाराज जी को भी) प्रसाद में सहभागी बनावो - उस समय चाहो तो प्रभु की लीला में भी प्रवेश कर सकते हो। मैं प्रताप, रिषि

साहब और बहुत से अपनी मंडली के संत महात्मा हम तुम लोगों का इंतजार करते रहते हैं। आओ और हमसे मिलो- हमको भी आनन्दित करो और स्वयम् भी आनन्द लूटो- प्रभु के सत् और चित् स्वरूप का अनुभव भी धीरे-धीरे हो जावेगा- पहले आनन्द का तो अनुभव करो- चौबीसों घण्टे मन प्रसन्न रखो- हमको हमेशा अपने पास ही समझो- हम सब तुम्हारे साथ ही नाच रहे हैं, तुम भी नाचो - अपने मन में एक छोटा-सा स्थान मुझे दे दो-एक छोटा-सा टुकड़ा ही दे दो तो भी चलेगा, ज्यादा नहीं चाहिए- आड़ा देता रहूंगा- कहो तो पगड़ी भी दे दूंगा (भौतिक या परमार्थिक योग-क्षेम वहन करूंगा) । Astral Travelling कोई बड़ी बात नहीं है, कुछ न कुछ तो तुम करते ही रहते हो। इस समय भी तुम मेरे लोक में ही हो, मेरी नौका में ही मैं तुम्हें घुमा रहा हूं और क्या चाहिए ? प्रत्यक्ष दर्शन का हठ मत करो- इसके लिए तुम्हारी भी तैयारी चाहिए नहीं तो डर जाओगे- जो है बराबर है। हमें तो हाजर ही समझो, इतने अक्षर तो लिखवा रहा हूं 'ॐ' या 'राम' जो ध्यान लगता है, हृदय में एक स्थान रखो जिसमें प्रभु की सेवा होती रहे, या महीने में एक दिन ही ध्यान रहे तो भी, 6 मास जैसी ताकत एक ही दिन में है। अभ्यास आस्ते-आस्ते होगा। मन खुश रखो-कोई प्रकार की मन में इच्छा न रखने से मन आनन्द में रहेगा- या होरी अन्तःकरण से प्रभु को देने से मन आनन्द में रहेगा- वह सब मन आनन्द में रखने के साधन हैं ।'

-श्रीरामबालकदासजी महाराज

Auto Writing Tran medium Seance Jan 98

लिखि लिखी लखि लिखी लखै लिखन्ता...

प्रश्न - महाराज जी, श्री राम नाम लेखन में कभी-कभी मन उचाट हो जाता है, प्रयत्न करने पर भी लिख नहीं पाते, थोड़ा-बहुत लिखकर छोड़ देते हैं। क्या करें ?

श्री महाराजजी - ऐसा समझो कि प्रभु की कृपा हो रही है। जिस पन्ने पर लिख रहे हो, उसे एक तरफ रख दो और एक दूसरा पन्ना लो। बीच में - प्रश्नकर्ता - यदि दूसरा पन्ना न हो तो ?

श्री म. - जिस तरफ लिख रहे हो उसे उस तरफ छोड़ कर पन्ना पलट दो - यदि उस तरफ पहले का लिखा हुआ है तो जिस तरफ लिख रहे थे उसी तरफ नीचे से नीचे के 'खाने' से बांई या दाहिनी तरफ से राम के बदले में मरा लिखना आरंभ कर दो - थोड़ी ही देर में मन स्थिर होकर लिखने लगोगे। बाकी का पन्ना राम या मरा किसी भी तरह लिखकर पूरा कर दो।

एक ही पाने में दो तरह की लिखावट हो तो कुछ फिकर नहीं - वहां कष्ट कटा ऐसा समझना, कोई बहुत ही क्लिष्ट कर्म निवृत्त हुआ। इस पन्ने को संजोकर रखो कभी मन आकुल - व्याकुल होने पर इसे पढ़ना चाहिए, यथा-

''राम बिहाई 'मरा' जपते, बिगरी सुधरी कवि कोकिल हू की।''

एक बात हमारी तरफ से 'लिखि लिखि लखि लिखी लखै लिखन्ता'- लिखने की सही विधि ऐसी है कि लिखे और उसे पढ़े और उसे संवारे - गलती हो उसे ठीक करे और फिर पढ़े और फिर उसे आगे लिखे - घसीटाक्षर नहीं चाहिए। साज-संवार कर सुन्दर से सुन्दर लिखे - बेमन से बेगार न काटे, जो लिखे उमंग में भरकर लिखे, मुझे हजार पन्ना नहीं चाहिए, प्रेम चुचुवाते मन से भरा एक 'खाना' भी मुझे स्वीकार है । 'खाने' में जो प्रभु मूरती बने वह सुन्दर से सुन्दर हो उसमें कृपा बरस रही है- आनन्द का प्रकाश झर रहा है - ऐसा भाव हो।

सभी उपस्थित जन - जय हो! जय हो! जय हो!

प्रश्न - महाराज जी, क्या आप भी नाम लेखन करते हैं ?

श्री म. - हां, हां, क्यों नहीं, तुम्हारी तरह मेरे पास स्थूल देह तो है नहीं पर तुम जो लिखते हो वह मैं ही लिखता हूँ। तुम मेरे अपने स्वरूप ही हो- जो लिखा जाता है। वह मैं ही हूँ।

सगुन-अगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।।

जब तुम `खाने' में प्रभु का नाम लिखते हो तो तुम अपने आत्मस्वरूप इष्ट की आकृति ही तो अंकित करते हो - तुम्हारा अपना निज - आत्मस्वरूप ही राम है। इस प्रकार नाम लेखन करने और उसका दर्शन करने से तुम अपने निजात्म स्वरूप इष्ट का ही दर्शन करते हो, यह प्रभु के निर्गुण स्वरूप का ध्यान, दर्शन और स्पर्श करने की एक विलक्षण विधि है। सकल चराचर जगत में चिदाकाश के रूप में व्याप्त तुम्हारा निजात्म स्वरूप जो आनन्दघन है उसी को प्रेम और विश्वास के बल पर एक `खाने' में प्रकट करते हो - वह तुम स्वयम् ही हो **Feel** करो और आनन्द से उल्लसित रहो। राम-नाम लेखन से यह सहज सुलभ है।

सभी उपस्थितजन अवाक् रह जाते हैं। कोई कुछ कहने या पूछने की स्थिति में नहीं है। सभा विसर्जित होती है।

-श्री रामबालकदासजी महाराज

Auto Writing Tran medium Séance Dated: 09/02/98

राम नाम लिखना कागज का दुरुपयोग नहीं

इष्ट आराध्य भगवान रामजी का विशेष कृपा पात्र वही है जिसको प्रभु रामजी अपना सेवक अर्थात् ``राम नाम'' के प्रचार कार्य का कर्मचारी नियुक्त करते हैं। ऐसा धर्मात्मा जीव हजारों में एक होता है, दूसरे शब्दों में वह पुण्य पुरुष अनेक लोगों को नवजीवन देने में समर्थ होता है। यह परम सौभाग्य की बात है कि हम आप सभी इसी श्रेणी में आते हैं जिस श्रेणी में `राम-नाम-लेखक' तथा प्रभु रामजी के प्रचार-कार्यकर्ता आते हैं। एक जन्म के चाहे कितने भी पाप हों, सभी पापों का नाश करने के लिए केवल एक बार `राम' लिखना ही पर्याप्त है। अतः चौरासी लाख जन्मों की मोक्ष के लिए चौरासी लाख बार के `राम' लिखने में ही ईश्वरीय प्रसंविदा (भक्त और भगवान का सम्बन्ध) पूर्ण हो जाएगा। इससे सरल और पुण्यवर्द्धक उपाय इस कलियुग में और कोई भी नहीं है। एक योनि के मोक्ष के लिए यदि एक बार `राम' नहीं लिख सकते, जिसमें कोई कष्ट नहीं है तो फिर चौरासी लाख योनियां और उनके भयंकर कष्ट कैसे भोगोगे ? अतः भारी, अवर्णनीय और भयंकर कष्टों से बचने के लिए राम-राम लिखने का थोड़ा कष्ट कर लो, इतने सुकुमार, सुकोमल और आलसी मत बनो।

जो कोई भी यह कहता है कि यह कागज की अनुपयोगिता है, उनसे मैं पूछता हूँ कि देश में बहुमूल्य कागज पर कितनी गन्दी से गन्दी और भद्दी से भद्दी किताबें एवं पत्रिकाएं अच्छे साहित्य के नाम पर छपती हैं जो कि अनावश्यक ही नहीं, अपितु देश-समाज, परिवार, बाल, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष सबके तन, मन, धन, चरित्र तथा भविष्य आदि की विनाशिका भी हैं। हां, तो क्या कागज का यह विनाश उन्हें दिखाई नहीं देता है ? थोड़ी सी असावधानी के कारण किसी भी तरह के छपे या बिना छपे कागज की जलाई जाने वाली होलियां भी इन्हें दिखाई नहीं देती हैं; क्या यह कागज का महाविनाश नहीं है ? कागज का जो अनावश्यक कागजी साज-सज्जा में, पोस्टरों में, प्रयोग किया जाना भी संभवतः उन्हें नहीं दिखाई देता। एक कक्षा में पढ़ने वाले

या पढ़ लिखकर बिना काम - धाम धोबी के कुत्ते की तरह इधर-उधर फिरने वाले क्या कागज के महाविनाशी नहीं हैं ? पढ़-लिखकर भी मानवता, अचरित्रता आदि दैवी गुणों से हीन, पशुवत् जीवन जीने वाले क्या ये कागज के महाविनाशी नहीं हैं ? कार्यालयों में या कहीं भी क्या कागज का सही उपयोग किया जाता है ?

हाथ से 'राम-राम' लिखकर भजन करने का प्रमाण तथा आदेश -

धन्नु सुकागज, कमल धनु, धनु भांडा धनु मस्सु।
धनु लेखारी नानका जिनि, नाम लिखाइया सचु।।

-संत श्रीरामजी, ईश्वरीय बीमावाले, (दिल्ली) के ग्रंथ 'ईश्वरीय बीमा' से साभार

राम नाम में 'राम' विराजित

आज कलियुग में व्यथा ही व्यथा है। जिसे देखो, जिसे खोजो, जिसे छूओ, जिससे बातचीत करो वही घायल मिलता है, जख्मी मिलता है। हर प्राणी बेचैनी, व्याकुलता, हड़बड़ाहट और घबड़ाहट की जिंदगी जी रहा है। छल-कपट के दलदल में फंसता जा रहा है। सहनशीलता, धीरजता मानव के चरित्र से हटती जा रही है। ऐसे में परमपिता परमात्मा की किसी प्राणी पर कृपा हो जावे और वह प्रभु स्मरण करने लग जावे तो इससे जीवन में धीरे-धीरे एक तरह की जो अनुभूति होती है उससे मानव का स्वभाव बदलने लगता है। जीवन में धीरजता आने लगती है।

सूरज की गर्मी से तपते हुए तन को मिल जावे तरुवर की छाया।
मन को मेरे मिला वही सुख जब से शरण तेरी आया।।

'राम नाम लेखन' से मुझे एक अद्भुत शान्ति प्राप्त हुई है। विपरीत परिस्थितियां, कष्ट, दुःख-सुख यह सब तो हमारे जन्म-जन्मांतर के अच्छे-बुरे कर्मों की देन है। ये सब आते-जाते रहते हैं। परन्तु, आज के कलियुग में यदि कोई प्राणी प्रभु नाम का स्मरण के साथ लेखन कर पाता है तो वह उस दिव्य शक्ति परमपिता परमात्मा की ही उस प्राणी पर कृपा हुई है; ऐसा मानना चाहिए। आज मानव इस कदर दुःखी हो गया है कि वह सुख की तलाश में भटकता रहता है। वह सुख पाने के लिए चोरी, छल-कपट, मदिरापान न जाने क्या-क्या बुरी आदतों को गले लगा लेता है। शायद वह उसके प्रारब्ध के कर्मों का ही फल है। यह सच है कि प्रारब्ध के किये हर प्राणी के कर्मों का लेखा-जोखा उसके जीवन के साथ-साथ चलता रहता है। राम नाम का स्मरण करते हुए संत-महात्मा और सज्जन व्यक्ति सहजता और प्रसन्नता पूर्वक दुःख उठा लेते हैं और अपने अशुभ कर्म क्षीण कर देते हैं।

निश्चित ही थोड़े-से मेरे भी अच्छे कर्म किसी जन्म में रहे होंगे जो मुझे 'राम नाम लेखन' से प्रभु भक्ति मिल रही है। मुझे प्रभु चरणों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह दादू ज्योति दादूराम की कृपा उनके आशीर्वाद से ही मुझे प्राप्त हुई है।

मेरी पत्नी सत्संग में जाती रहती है। आज से सात-आठ साल पहले की बात है, रात को सोने से पहले वह मुझे सत्संग में जो कुछ सुनकर आती सुनाती तब मैं उसे डाँट देता था कि मुझे सुबह काम पर जाना है सोने दे मुझे नहीं सुनना है। लेकिन, वह कुछ न कुछ तो मुझे सुना ही देती थी। मैं उसकी बातों को सोचता रहता था। मुझे लगने लगा मैं अपना जीवन व्यर्थ गंवा रहा हूँ। मैं सोचता, क्या इसी तरह तेरे-मेरे के चक्कर में जीवन बीत जाएगा? उन्हीं दिनों 'राम नाम लेखन' की कुछ किताबें पत्नी घर पर लाई और कहा - थोड़ा

समय इस असल धन के कमाने में भी लगावें पतिदेव ! मैंने पूछा क्या है? उसने राम नाम लेखन की किताबें सामने रख दी और कहा लिखा करो। कितना शुभ दिन था वह जब परमात्मा की कृपा से मैं राम-राम (राम नाम लेखन) किताब में लिखने लगा। कुछ दिनों तक मैं कम लिखता था। जैसे-जैसे मैं लिखता गया मुझे मन में बहुत शान्ति का अनुभव होने लगा। अब मैं ज्यादा समय तक राम नाम लेखन में लगा रहना चाहता हूँ। प्रभु की कृपा से मैं निन्दा-चुगली-नुक्ताचीनी से बच गया।

राम नाम लेखन में धीरे-धीरे मैं प्रभु कृपा से विविधता लाने लगा। अलग-अलग इन्द्रधनुषी रंगों से राम नाम का चित्र अंकित करने लगा। राम नाम की रंगोली सजाने लगा। एक असीम आनंद की अनुभूति मेरे हृदय में होने लगी। मुझे लगता है न जाने दादू-ज्योति के अणगणित दीपक मेरे मन में जाग उठे हैं। मेरा रोम-रोम बस यही गा रहा है राम-राम-राम ! मुझे लगने लगा और सुन्दर राम नाम अलग - अलग तरीकों से लिखूं । ठाकुर को भाँति-भाँति तरीकों से रिझाऊँ। मूर्ति को सजाते हैं, वस्त्र पहनाते हैं, अलंकार से सुशोभित करते हैं, ठाकुर का शृंगार करते हैं। वैसे ही प्रभु शक्ति से मैं राम नाम के महामंत्र को सजाने का प्रयास करते रहता हूँ, इससे मुझे बड़ी आत्मशांति मिलती है। लोगों को राम नाम से सुशोभित रंगोली के रंगों से सजाये पन्ने दिखाने लगा। उन्हें देखकर कई लोग लिखने लगे। लोगों में `राम नाम लेखन` की प्रेरणा जागृत हो और वह लिखें, दादूराम के आशीर्वाद से मैं हर वक्त इस कार्य में संलग्न रहना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि मुझे जो आनन्द मिल रहा है वह लिखेंगे तो उन्हें भी अवश्य मिलेगा। अपने आप को प्रभु चरणों में समर्पित करते हुए हृदय कोष्ठ में राम नाम रखकर जो `राम नाम लेखन` कर पाता है उसे उसी परमात्मा की इच्छा से यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह अनमोल खजाना लूटते रहना चाहिए।

`राम नाम लेखन`से शरीर की इन्द्रियाँ प्रत्यक्ष रूप से परम पिता परमात्मा की भक्ति में लग जाती है। `राम नाम लेखन` के वक्त हर प्राणी का मन-मस्तिष्क, हाथ, आँखें राम नाम में डूबे रहते हैं।

किसी संत ने कहा है -``वंदन करने का भाव जब हमारे हृदय में जागे तो समझिये भक्ति की डाली पर फूल आ गये और प्रयास करते रहो फल भी आ जाएंगे।`` हे मेरे परमेश्वर ! मुझे इतना लोभी बना दे कि मैं भक्ति की डाली पर फूल देख पाऊँ। हे कृपानिधान ! सदैव अपनी कृपा वृष्टि मुझ पर बनाये रखना। मैं `राम नाम लेखन` में डूबा रहूँ। प्रभु अपनी भक्ति से मुझे वंचित न करना मेरे नाथ ! हे प्रभु ! मैं सदैव `राम नाम` की मदिरा पीता रहूँ।

सच कहता हूँ `राम नाम` को लुटावें। आप स्वयं मन में अनुभव करेंगे कि कितनी अद्भुत शक्ति इस नाम में है। आप के पास धीरे-धीरे राम नाम का कवच बनता चला जाएगा। आपका हृदय स्वच्छ परोपकारी भक्तिमय होता चला जाएगा। जीवन के हर अच्छे-बुरे समय को आप धीरजता से सह जाएंगे। किसी भी व्यक्ति के जीवन में जल्दी या देर से श्रद्धा आये तो जीवन दिव्य बनता चला जाएगा।

``बुनिया देखो मन ने जाना-अब तो रह गई एक ही प्यास।
बन्धु प्रभु चरणों की आस।।``
राम राम ही सिमर मन, राम राम श्री राम।
राम राम श्री राम भज, राम राम हरि नाम।।
राम राम जप हे मना, अमृत वाणी मान।
राम नाम में राम को सदा विराजित जान।।

-कमल कान्त पसारी, मुंबई

राम नाम और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

१. हृदय से राम नाम लेना एक महान् शक्ति का सहारा लेना है, उसके मुकाबले अणुबम भी कोई चीज नहीं।

-हरिजन सेवक (पत्रिका) १३-१०-४६

२. रोग को मिटाने में कुदरती इलाज का अपना बड़ा स्थान है, उसमें भी राम नाम अति विशेष है।

-हरिजन सेवक (पत्रिका) २४-३-४६

३. राम नाम अमोघ मंत्र है। शायद आप कहेंगे राम नाम में आपको विश्वास नहीं, आप उसे नहीं जानते, लेकिन उसके बगैर आप एक सांस भी नहीं ले सकते। उसे आप चाहे ईश्वर कहिए, अल्लाह कहिए, गॉड कहिए या अहुरमज्द कहिए। दुनिया में जितने भी इंसान हैं, उनके बेशुमार नाम हैं। विश्व में राम जैसा नाम दूसरा कोई नहीं। वह महान् है, विभु है। दुनिया में उससे बड़ा कोई नहीं। वह अनादि, अनंत, निरंजन और निराकार है, मेरा राम ऐसा है। एक वही मेरा स्वामी और मालिक है।

हरिजन सेवक (पत्रिका) २४-११-४६

४. आध्यात्मिक रोगों को (आधियों को) मिटाने के लिए राम-नाम का इलाज बहुत पुराने जमाने से हमारे यहां चलता आया है, लेकिन चूंकि बड़ी चीज में छोटी चीज भी समा सकती है, इसलिए मेरा यह दावा है कि हमारे शरीर की बीमारी को दूर करने के लिए भी राम नाम सब इलाजों का इलाज है।

हरिजन सेवक (पत्रिका) ७-४-४६

५. आश्चर्य है कि वैद्य मरते हैं, डॉक्टर मरते हैं, फिर भी उनके पीछे हम भटकते हैं, लेकिन जो राम मरता नहीं, हमेशा जिन्दा रहता है और अचूक वैद्य है उसे हम भूल जाते हैं।

सेवाग्राम ३०-१२-४४

नाम जप की महत्ता एवं प्रासंगिकता

नाम जप आज के युग में आत्म-कल्याण एवं भगवत्-प्राप्ति का सबसे सरल, सर्वाधिक सुलभ एवं सार्थक मार्ग है। कैसे भी किया जाए, नाम-जप से लाभ ही लाभ है। नाम-जप के लिए किसी प्रकार के यम-नियम, साधन-संयम, देशकाल बंधन की आवश्यकता नहीं है। नाम-जप की महिमा का गुणगान संतों और आचार्यों ने एक स्वर से किया है।

पिछले कुछ वर्षों से नाम-जप की एक नई विधा-लिखित नाम-जप का प्रचार-प्रसार तेजी से हो रहा है। वैसे तो सभी प्रकार के नाम जप की विधाओं का अपना -अपना महत्व और श्रेणियां हैं, लेकिन लिखित नाम-जप में एकाधिक इन्द्रियों की संलग्नता होने के कारण उसका महत्व और प्रभाव तुलनात्मक दृष्टि से ज्यादा हो जाता है। चित्त की एकाग्रता प्राप्त करने की दृष्टि से लिखित नाम-जप एक समग्र, संपूर्ण और बेजोड़ साधन है।

लिखित-जप करते हुए साधक जब कोष्ठकों में अपने स्वामी राम की स्थापना करता है तो मानो वह पन्ने के हृदय में ही राम की स्थापना करता है। नाम-लेखन करते -करते एक-न-एक दिन निःसंदेह साधक के हृदय-मंदिर में स्वयं राम प्रस्थापित हो ही जाएंगे। लिखित-नाम जप की महत्ता स्वयं भगवान राम ने त्रेता में प्रस्तर खंडों पर अपने परमप्रिय वानर-भालुओं से राम-राम लिखवाकर स्थापित कर दी थी। हमारा हृदय

उन प्रस्तर खंडों से ज्यादा भारी नहीं है। अतएव हम निःसंदेह लिखित-नाम-जप के निरंतर अभ्यास द्वारा अपने हृदय रूपी कोष्ठकों में राम को बैठाकर संसार सागर को सहज ही पार कर सकते हैं।

धन्य हैं वे लोग जो निस्वार्थ भाव से, तन से, मन से अथवा धन से, लिखित-नाम-जप के महायज्ञ में किसी भी रूप में संलग्न हैं। क्योंकि भगवान की जिन पर कृपा होती है उन्हें वे मानव देह प्रदान करते हैं, जिन पर विशेष कृपा होती है उन्हें वे अपना नाम प्रदान करते हैं और जिन पर अति विशेष कृपा होती है उन्हें वे अपने प्रचार में लगा लेते हैं।

-डा. रामदीन बानुड़ा, मुंबई

लिखिता जप

निसंदेह 'जप' मानव का कल्याण करने का एक मात्र साधन है। विधि अनेक हैं। 'माला' जप ही प्राचीन प्रथा रही है। लिखिता जप यानि भगवान का नाम कागज पर कोष्ठक में बार-बार लिखना। इस विधि से जप प्रामाणिक होता है। साधक का उत्साह बढ़ता है। अन्य संत्संगी को प्रेरणा मिलती है। लिखिता जप करते समय पूर्ण लाभार्थ मन में प्रभु का ध्यान, आँख में उनका वर्ण, भगवान में दृष्टि, मुँह से उच्चारण और हाथ से लिखावट का समावेश हो।

मंत्र-जाप पूरित कागज या नोटबुक को मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा में या तीर्थ में प्रतिष्ठित करना चाहिए। इस सत्कार्य के लिए कागज या नोटबुक छपाकर भक्तों तक पहुँचाने आदि काम में लगे हुए लोग भाग्यशाली हैं। वे प्रभु का कार्य यानि भक्ति कर रहे हैं। इस विधि को तन मन धन से कार्यान्वित करना चाहिए। आज संपूर्ण भारत में जहाँ-जहाँ यह कार्य हो रहा है वे सब धन्य हैं और समाज मे फैले विष को कम करके अमृत घोलने का कार्य कर रहे हैं। प्रभु उनका मंगल करें।

-चंद्रशेखर अग्रवाल, मुंबई

पूज्य डोंगरेजी महाराज एवं लिखिता-जप

'सद्विचार परिवार' पूज्य डोंगरे जी महाराज की कृपापात्र संस्था है। पूज्य महाराजश्री ने पूर्ण सद्भावना के साथ उनको वे कथाएं दी थीं। उनकी ५७ वीं सालगिरह पर अम्बाजी में कथा दी थी। इस कथा में हम लोगों ने धन प्राप्ति का लक्ष्य नहीं रखा था, किंतु जो सबसे अधिक 'हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे...' मंत्र लिख कर देवें वह मुख्य यजमान हो, उससे कम मंत्र लिखने वाले उत्सव यजमान, उससे कम मंत्र लिखने वाले दैनिक यजमान और उससे कम मंत्र लिखने वाले पोथी यजमान ऐसा अभिगम रखा था।

-हरिलाल वि. पंचाल, सदविचार परिवार, अहमदाबाद, गुजरात।

सुप्रसिद्ध ज्ञानी, विचारक और दार्शनिक श्री डोंगरे महाराज ने श्रीमद्भागवत् का साररूप 'भागवत् रहस्य' नामक ग्रंथ मूलतः गुजराती में लिखा है। स्व. लालजी ने इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया था नकद रकम के बजाय लिखित नाम जप अर्थात् सवा लाख भगवन्नाम लिखकर भेजने वाले को यह उपादेय ग्रंथ दिया करते थे।

-नानालाल भट्ट, प्रभावती देवी ट्रस्ट,
५९, गोविन्दप्पा स्ट्रीट, चेन्नई-६००००१.

राम नाम भगवान का स्वरूप

राम नाम भगवान का ही स्वरूप है। राम नाम लिखने से जड़ पत्थर तैर गए। लिखते-लिखते मनुष्य के कोमल हृदय पर राम अंकित हो जाय तो मानव, महामानव ही नहीं देवता बन जाता है। मन की शांति की महान् औषधि राम नाम महामंत्र का अलंकरण है। लेखन से आसन स्थिर बनता है और आसन स्थिर होने से मन भी स्थिर होकर शांत बनता है। मंत्र लेखन में सर्वप्रकार के दुःखों को दूर करने की प्रचंड शक्ति है।

हमारे नेत्र कैमरे का कार्य करते हैं। उनसे लिया हुआ चित्र अंतःकरण में उभरता है। जड़ कैमरे से लिया हुआ चित्र या प्रेस में छपे पेपर पानी से नहीं धुलते उसी प्रकार कलेजे पर छपे राम-नाम महामंत्र को विषय-वासना की बाढ़ नहीं धो सकती। नेत्र जिस तरह प्रकाश-विकास के द्वार हैं उसी तरह विलास-विनाश महापाप के प्रवेश द्वार भी नेत्र ही हैं। पाप की प्रेरणा देकर जो अंतःकरण अशुद्ध करते हैं वही नेत्र मंत्र लेखन के साक्षी बनकर हमारे पापों को भस्मीभूत भी कर देते हैं।

मंत्र लेखन के माध्यम से ईश्वर के असंख्य आघात होते हैं और मन पर स्थायी संस्कार जम जाते हैं। इन आध्यात्मिक संस्कारों से साधना में प्रगति की संभावना सुनिश्चित हो जाती है। जिस स्थान पर मंत्र लेखन किया जाता है उस स्थान पर साधक के श्रम और चिन्तन के समन्वय से उत्पन्न सूक्ष्म शक्ति के प्रभाव से एक दिव्य वातावरण पैदा हो जाता है जो साधना क्षेत्र में सफलता का सेतु सिद्ध होता है।

पूज्य श्री कृष्णचंद्रजी शास्त्री (दादा), प्रायोजक- श्री भगवन्तामंत्र बैंक, अहमदाबाद।

श्री राम नाम लेखन के आदि प्रायोजक- श्रीगणेशजी

सम्पूर्ण त्रिलोकी की प्रदक्षिणा करके जो सबसे पहले आ जाय, वही सबसे पहले पूज्यनीय हो। देवताओं में ऐसी शर्त होने से गणेशजी निराश हो गए, पर नारदजी के कहने से गणेशजी ने 'राम' नाम पृथ्वी पर लिखकर उसकी परिक्रमा कर ली। इस कारण उनकी सबसे पहले परिक्रमा मानी गई। नाम की ऐसी महिमा जानने से गणेशजी सर्वप्रथम पूजनीय हो गए।

(इस आधार पर कह सकते हैं कि श्री राम नाम लेखन सर्वप्रथम श्री गणेशजी महाराज द्वारा प्रायोजित किया गया।)

-परम श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी की 'मानस में नाम वन्दना' से साभार

राम नाम लेखन जप यज्ञ

राम-नाम लेखन जप यज्ञ में सम्मिलित होने से लेखन करते समय मानसिक स्मरण होता है, सतोगुण की वृद्धि होती है, हाथ-आंख और मन यज्ञ में लगते हैं। यह सत्प्रवृत्ति समाज में व्यापक बने, लोगों के तन-मन पवित्र बनें, बुद्धि में सत्वगुण का साम्राज्य छा जाय। हर जाति, धर्म सम्प्रदाय के लोग अपना इष्ट मंत्र लिखकर उन्नत हों इस हेतु से एकता के स्वरूप में सबको बांध कर विश्व में शांति एवं प्रेम का साम्राज्य छा जाय। इस हेतु से उदारात्मा संतों की अहैतुकी कृपावश इस यज्ञ का प्रारंभ हुआ, प्रोत्साहन मिला। उन संतों के इस विश्वव्यापी निःस्वार्थ संकल्प में मंत्र लिखने लिखवाने का जिसे अवसर मिलता है, वे धन्य हैं। मंत्र-लेखन के दिनों में अशुद्ध आहार-व्यवहार से बचें, इससे मंत्र-लेखन का लाभ अनंतगुणा होता है।

-संतप्रवर पूज्यपाद श्री आसारामजी बापू, साबरमती आश्रम, अहमदाबाद।

लिखते लिखते लख लिया

राम-राम लिखते-लिखते आदमी राम को लख लेता है, जान लेता है, पहचान लेता है। लिखने में कर्म भी होता है, अतः कर्म शुद्धि होती है। मन भी लगता है, अतः मन शुद्धि होती है।

-संतप्रवर पूज्यपाद श्री मोरारी बापूजी

त्रिशक्ति योग

मंत्र लेखन में यह विशेषता है कि अपनी पूरी चेतना लिखते समय उसमें रहती है। क्रिया भी वही, विचार भी वही, भावना भी वही और इस प्रकार क्रिया-शक्ति, विचार-शक्ति एवं भावना-शक्ति ये तीनों शक्तियाँ सवत्मिन् इसमें लगती हैं। जप के समय ध्यान इधर-उधर हो सकता है, पर लेखन के समय इधर-उधर नहीं हो सकता, पूर्ण मनोयोग से इसमें लग सकते हैं।

-संतप्रवर पूज्यपाद 'भाईजी' श्री रमेश भाई ओझा

स्वाभाविक एकाग्रता

राम नाम के सभी विधानों का बड़ा महात्म्य है। लेखन विधान विशेष इसलिए होता है कि जब लिखेंगे तो स्वाभाविक ही आंख, मन और हाथों को इसमें एकाकार करना होगा। अतः मन एवं इन्द्रिय दोनों का संयोग होता है।

-मानस मर्मज्ञ श्री रामकिंकरजी

राम-नाम कलि अभिमतदाता

प्राचीन काल से सभी उपासकों ने नाम आश्रय द्वारा साधना में सिद्धि प्राप्त की है। नाम के द्वारा ही 'नामी' परमात्मा के स्वरूप की वास्तविक अनुभूति होती है। कलियुग में तो 'राम-नाम कलि अभिमत दाता' ऐसा माना गया है। श्री दादूलीला 'राम नाम परिक्रमा' शोध संस्थान का नाम-प्रचार सराहनीय है। जितना राम-नाम व्यापक होगा उतना ही समाज काम दोष से बच सकेगा। कामना ही बंधन है और निष्कामता मुक्ति। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि घर-घर में राम-नाम गूंजे। लेखन द्वारा प्रचार हो जिससे भारतवर्ष एवं विश्व का कल्याण हो।

-स्वामी श्री सत्यमित्रानन्द जी गिरी, भारतमाता मंदिर, हरिद्वार।

राम नाम असत् से सत् की ओर ले जा सकता है

जितना हो सके उतना राम नाम का स्मरण करो।

जितना हो सके उतना राम नाम को लिखो।

जितना हो सके उतना राम नाम का प्रचार करो।

राम नाम ही तुम्हें असत् से निकाल कर सत् की ओर ले जाएगा।
राम नाम ही तुम्हें अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाएगा।
राम नाम ही तुम्हें मृत्यु के मुख से निकाल कर अमृत की ओर ले जाएगा।
तुम्हें जब शान्ति मिलेगी तो राम नाम से ही मिलेगी।
तुम राम नाम को मत छोड़ना।
अपने रोम-रोम में राम नाम को संभालो।
अपने साँस-साँस में राम नाम को बसा लो।
- स्वामी श्री कूटस्थानंदजी महाराज

राम नाम में अद्भुत शक्ति

'र' अक्षर वेदों के अनुसार अग्निदेव का बीज मंत्र हैं। अग्नि का कार्य है जलाना। अग्नि कूड़े कर्कट को जला सकती है, किंतु हमारे पापों को जलाने की शक्ति अग्नि में नहीं है, वह शक्ति राम के 'र' अक्षर में है। 'अ' अक्षर वेदों के अनुसार सूर्य का बीज मंत्र है। सूर्य प्रकाश देता है। सूर्य उदय होता है तो बाहरी अन्धकार दूर होता है, किन्तु हृदय का अन्धकार दूर नहीं होता। राम नाम के 'अ' अक्षर में वह शक्ति है जो हृदय के अन्धकार को दूर करता है। 'म' अक्षर चन्द्रमा का बीज मंत्र है। चन्द्रमा शीतलता प्रदान करता है, किंतु चंद्र उदय होने से हृदय का क्लेश दूर नहीं होता, राम के 'म' अक्षर में वह शक्ति है जो हृदय को क्लेश रहित कर शांत करता है।
-संतप्रवर स्वामी श्री गणेशानंदजी, सत्गुरु धाम, दिल्ली।

राम नाम लेखन सांसारिक फायदे के लिए नहीं

उल्टा शब्द- लेखन फायदे के लिए ? कई जन्मों में राम-राम संसारी फायदे के लिए किया, संसार के लिए करने से संसार मिलता है। फिर वही देह, वही राग, वही द्वेष, वही काम-क्रोध-मोह-मत्सरा क्या इसे फायदा कहा जाएगा ? फायदे के लिए तो सब कुछ कर चुके, एक काम बेफायदा के लिए भी करके देखो तो होगी मोक्ष, होगी भगवत् प्राप्ति। परमात्मा किसी कर्म का फल नहीं है। जो कुछ किया तो परमात्मा मिला ऐसा नहीं है। फायदे के लिए लिखने की क्या आवश्यकता है, फायदा तो प्रारब्ध के अनुसार मिल ही जाएगा। मीरा की तरह बेफायदा करके देखो, मीरा (मीरा, मीरा मीरा-रामी, रामी, रामी-रामकी, रामकी, रामकी) को क्या मिला ?

'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो'

बेफायदा (परमात्मा) के लिए मीरा ने फायदा (राजमहल) छोड़ दिया। सो भाई इसमें नुकसान ही नुकसान है। क्या नुकसान होगा ? देह की आसक्ति, ममता, लोकेषणा आदि छूट जाएंगे। लिखने में कर्मेन्द्रिय (हाथ), ज्ञानेन्द्रियां (आंख), एवं अंतःकरण (मन) तीनों काम करते हैं। जप में केवल मन, माला में मन और हाथ, पर लेखन में मन, हाथ और आंखें तीनों को बराबर लगाना पड़ता है, अतः तीनों एक साथ भगवान को समर्पित हो जाते हैं।
पूज्यपाद श्री १०८ आत्मानंदजी गिरी, देवघाट धाम, नेपाल।

भगवान से निकटता

जो भी हम लिखते हैं उसे उसके पूर्व उसे हमारे मन में उतरना होता है। लेखन अभिव्यक्ति है, बोलना अभिव्यक्ति है। बोलने के पूर्व भी विषय मन में उत्पन्न होता है, लिखने के पूर्व भी मन में विषय उत्पन्न होता है। यदि हम भगवान के नाम का उच्चारण करते हैं तो उच्चारण करने से पहले भगवान हमारे मन में अनुभूत होते हैं, उसके बाद बोली द्वारा अभिव्यक्त होते हैं। इसी प्रकार जब हम लिखते हैं तो लिखने से पहले भगवान हमारे मन में अनुभूत होते हैं, उसके बाद लेखनी द्वारा अभिव्यक्त होते हैं। लेखनी और वाणी दोनों अभिव्यक्ति के माध्यम हैं और आदमी वही अभिव्यक्त करता है जो वह अनुभूत करता है। अतः जब हम राम नाम का लेखन करेंगे तो उसके पूर्व राम नाम का अनुभव होगा। अतः राम नाम लेखन, राम नाम जप के समान भगवान की निकटता प्राप्त करने का सरल सुगम उपाय है।

-पूज्य आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी महाराज

लेखन प्रभाव

राम के नाम में एक ऐसा प्रभाव देखा है कि लिखते-लिखते ही एकाग्रता बढ़ती है। मुंह से जप करते-करते तो कभी मन भटक भी सकता है, लेकिन लिखने से तो मन में राम का नाम भीतर उतर ही जाता है।

-भक्तिमूर्ति प्रो. प्रेमा पांडुरंग

लगन में मगन

लिखने से मन तन्मय हो जाता है। लिखने की लगन में मगन हो जाता है। योग क्या है कि प्रभु का हमको एक बार परिचय प्राप्त हो जाय और उसकी लगन में हम मगन हो जायें। लगन में मगन हो जाना तो सबसे अच्छी बात है। लिखने से अनेक जन्म के बुरे कर्मों का विनाश होता है। भगवान का नाम लिखने से आत्मिक शक्ति बढ़ जाती है, और आत्मिक शक्ति को बढ़ाना आज बहुत ही जरूरी है।

-ब्रह्मा कुमारी-पूज्यनीया योगिनी बहनजी, मुंबई

लेखन से इंद्रियों की पवित्रता

लिखने में हमारी कर्मेंद्रियां व्यवहृत होती हैं, हमारा मन, बुद्धि, हमारा हाथ और साथ-साथ आंखें भी व्यवहृत होती हैं। कई बार हम बोल के लिखते हैं तो हमारा मुख भी व्यवहार में आ जाता है। कर्मेंद्रियां जितनी ज्यादा श्रेष्ठ कार्य में लगती हैं उतनी ही पवित्र होती हैं। जब हम परमात्मा का नाम लिखते हैं या कोई महावाक्य लिखते हैं या श्रेष्ठ वाक्य लिखते हैं, शुभ चीज लिखते हैं तब हमारे मन और बुद्धि के इस्तेमाल से संस्कार बन जाते हैं और जब संस्कार बन जाते हैं तो परमात्मा का चिंतन सहज रूप में होने लगता है।

-ब्रह्मा कुमारी- पूज्यनीया पद्मा बहनजी, मुंबई।

शिशु सुलभ मार्ग

भाव कुभाव अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसी दसहूं।

राम नाम से सभी ग्रहों की शान्ति होती है और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता मिलती है। नाम कैसे भी लें, वह अपना प्रभाव दिखाता ही है। जाने-अनजाने में भी यदि आग का स्पर्श हो जाय तो जैसे आग अपना प्रभाव दिखलाती है वैसे ही नाम महाराज का प्रभाव है। 'येन केनऽपि उपायेन' राम को याद करना है।

जिसे हम याद करना चाहते हैं उसका नाम हम बार-बार लिखते हैं। प्रेमी अपने प्रियतम का नाम कागज पर, रेत में, पत्थर पर, वृक्ष के तने पर, यहां तक कि अपने शरीर पर भी लिखवाते हैं। इसी प्रकार 'राम-नाम-लेखन' सहज सरल प्रक्रिया है अपने प्रियतम राम को रिझाने और बुलाने की। बचपन में जैसे 'क' को स्लेट पर बार-बार लिखने से 'क' हमेशा के लिए मानस पटल पर अंकित हो जाता है वैसे ही 'राम' लेखन के द्वारा हमारे हृदय पटल पर छा जाता है, हमेशा के लिए। यह बड़ा ही शिशु सुलभ मार्ग है। राम है तो दुर्लभ, पर परम सद्गुरु श्री दादूदयाल जी महाराज के संत और भक्त इसे सर्व सुलभ बना रहे हैं। जप में मन नही लगता, परन्तु लेखन में नेत्र, हाथ, जिह्वा, बुद्धि और मन लगाना ही पड़ता है, इसलिए इससे एकाग्रता और ध्यान सहज ही प्राप्त हो जाता है। ''जगत कूकरी को भुसबा दे, तूं तो राम सिमर जग हंसबा दे''। भगवान ने कहा है - मैं वहाँ रहता हूँ जहाँ मेरे भक्त मेरे नाम का स्मरण, कीर्तन और गायन करते हैं। राम नाम लेखन से स्मरण, कीर्तन और गायन इन तीनों का संगम होता है। आइये, लिखते हैं राम नाम और बन जाते मतवाले...

-संत श्री बालकिसनजी अग्रवाल, मुंबई

वर्तमान युग की अनुकूल साधना

भगवन्नाम के वाचिक जप की भांति लेखन जप भी एक महत्वपूर्ण विधा है, जिसे वर्तमान युग की अनुकूल साधना भी कहा जा सकता है। जिह्वा से उच्चारण करने के साथ-साथ मन, वाणी, दृष्टि एवं क्रिया शिल्प का सहज विनियोग होता है। आसन-सिद्धि तथा अन्तःकरण की एकाग्रता और सद्यः शुद्धि इसके प्रत्यक्ष फल हैं। नाम और नामी में कोई फर्क नहीं है। अतः नाम का लिखित रूप देखने पर एवं इसके लिखने पर क्रमशः भगवद्स्वरूप के दर्शन एवं भगवत् चित्र अलंकरण का फल मिलता है। इतना ही नहीं, बल्कि जब प्रत्येक कोष्ठक में मंदिर की भावना बनाकर नाम अलंकृत करते हैं तो भगवान के अर्चा विग्रह की स्थापना का पुण्य भी मिलता है।

-अंबरलाल पोरवाल, प्रबंधक-श्री राम नाम बैंक, उज्जैन।

लिखित जप एक निवेदन

पूज्य गुरुदेव (स्वामी श्री चिन्मयानंदजी) का एक विश्वास था कि पवित्र स्थलों की विशेषता और अधिक बढ़ जाती है जब अधिक से अधिक भक्तजन भगवान का लिखित जप अर्पित करते हैं। अतः तेजोमयानंदजी ने

सभी चिन्मय श्रद्धालुओं को दैनिक लिखित जप ``ॐ श्री चिन्मय सद्गुरुवे नमः`` शुरू करने का निर्देश दिया है।
-`चिन्मय संदेश` जुलाई ९६ से साभार।

सौ बरख्या, एक लिरख्या

एक बार लिखना सौ बार बोलने के बराबर होता है। लिखने से एकाग्रता बढ़ती है। लोग कह देते हैं कि मन नहीं लगता तो लिखकर क्या होगा? पर, नियम से लिखोगे तो मन अवश्य लगेगा। एक श्रोता ने पूछा, `राम-राम तो बिना ध्यान के भी लिखा जा सकता है तो फिर एकाग्रता कैसे बढ़ेगी ?` तो मुनिश्री का उत्तर था- बिना एकाग्रता और बिना ध्यान के लिखना हो ही नहीं सकता; क्योंकि बिना ध्यान अक्षर सही नही बनेंगें, पंक्ति में नहीं रहेंगे, लिखावट में अंतर आ जाएगा तो कैसे लिखोगे ? अतः ध्यान सहज ही हो जाता है।
-श्रद्धेय मुनिश्री सुधासागर जी महाराज

राम नाम स्वयं भगवान

लिखते वक्त पहले तो लिखने वाले के हृदय में नाम आता है, उसके बाद लेखनी में आता है। राम नाम स्वयं भगवान ही हैं। राम नाम लिखने में व भगवान राम में रञ्च मात्र भी अंतर नहीं मानना चाहिए। राम नाम लिखते वक्त हृदय में आ गया यानि स्वयंमेव राम भगवान ही हृदय में आकर बैठ गए, प्रकट हो गए।
-स्व. बालकृष्ण गणपतजी महाजन, खरगोन, (म.प्र.)

पुनर्जन्म

मेरी उम्र ८८ वर्ष की है। डॉक्टर ने जवाब दे दिया था। मैं बेड पर हूँ। राम नाम लेखन पत्रों के कारण मेरा पुनर्जन्म हो गया है।
-स्व. मुरारीलाल केड़िया, खामगांव, महाराष्ट्र
(श्री केड़ियाजी यह पत्र लिखने के बाद राम नाम लेखन प्रचारार्थ संस्थान के साथ अंतिम समय (चार वर्ष) तक जुड़े रहे)

धन्योऽहम्! धन्योऽहम्!

संतों के दर्शन हेतु जोधपुर गया था। बहुत आनंद हुआ, ऐसा लगा कि जन्म जन्म की प्यास मिट गई, चारों धाम की यात्रा कर ली, पावन हो गया, मैं कृत-कृत हो गया। धन्योऽहम्! पुनि-पुनि धन्योऽहम्! राम-नाम लेखन पत्रों की ३०/ ३५ महात्माओं ने सराहना की व लाखों लोगों में प्रसार हुआ। माइक पर कह दिया।

हमारे गुरु महाराजजी (श्री रामप्रकाशाचार्यजी महाराज, जोधपुर) ने कहा कि एकता का स्वरूप 'राम' हृदय कोष्ठक में लिखें व कहा कि प्रपत्र चाहे तो आप वहां जमा करावें या डाक से प्रपत्र में दिए किसी भी पते पर भेजें। सत्संग-प्रवचन सुनने लाखों लोग आते थे। सात-आठ सौ प्रपत्र भी ले गए। दूसरे दिन भर कर सब वापस भी ले आए। मगर मुझे अफ़सोस है कि मेरे पास ८०० प्रपत्र ही थे। ज्यादा होते तो बहुत अच्छा होता, मगर इतना मुझे पहले से अनुभव नहीं था। अगर लाख प्रपत्र होते तो भी एक दिन में भर गए होते।
-'जोधपुर यात्रा संस्मरण', जीवाराम सुतार, पुणे, महाराष्ट्र

मुक्ति का पूर्णाधार

ब्रह्ममय किंवा ब्रह्म रामजी के राम नाम लेखनानुष्ठान पुण्यप्रद तो है ही मुक्ति का पूर्णाधार भी है। वस्तुतः सद्गुरु ही अपने भाव बल का संचार हम सब में करते हैं। मूल कर्ता तो गुरुवर्य स्वामी जी भगवन् श्री आसाराम साधू ही हैं, हम सब तो निमित्त मात्र हैं। वे इच्छा संचारी हैं और इच्छा मात्र से कर्ता । श्री सद्गुरु के पुनीत पद पङ्कजों में हार्दिक नमन है।

-कुंवर नरेन्द्र सिंह, रूठियाई, म.प्र.

'सत्यराम' की माला

अब देख आंखें खोल
रे मन पगले! अबदेख आंखें खोल,
क्षण-क्षण हो रहा ह्रास तन का, जीवन है अनमोल।
'सत्यराम' की माला जप ले, पकड़ हाथ में धर्म की डोर,
'श्री दादूपालकाँ धाम' पुकार रहा, तूं चल उसकी ओर,
वहीं होगी तेरी तृप्ति मुक्ति, जग मरुस्थल में मत डोल।
रे मन पगले...
सुगन्धित सुशोभित राम वाटिका में लगे सलोने फूल,
भूल से भी मत चुनना काम, क्रोध, मद-लोभ के तीक्ष्ण शूल,
पग-पग जीवन के श्वांस-श्वांस को गुरुज्ञान तुला में तोल।
रे मन पगले...
परमाराध्य 'दादूराम' कृपा ले, उनकी महिमा को तू जान,
पिंजरा मानव तन दिया प्रभु ने तुझे अनुपम वरदान,
लिख रट राम-राम जीवन में 'सत्यराम' तू बोल।
रे मन पगले...
-स्व. शिवनारायण श्रीवास्तव, जोबट, म.प्र.

मेटत कठिन कुअंक भाल के

लिखने से शान्ति मिलती है, भगवद् भावना बढ़ती है। समय व्यर्थ नहीं जाता। संतों की सत्प्रेरणा, संत समागम, सत्संग मनुष्य का मार्गदर्शन करता है।

(आदरणीय दादाजी को राम नाम का बचपन से ही लगाव है। वह लेखन कार्य में पिछले २० वर्षों से कार्यरत हैं। हमारे यहां कोई भी रिश्तेदार या परिचित मित्र आते हैं तो दादाजी उनको बिना भूले राम-नाम लेखन प्रपत्र, कापी और लाल स्याही का बॉलपेन देते हैं- सुनील मूंदड़ा)

-बिसेसरलाल मूंदड़ा, जालना, महाराष्ट्र

राम नामांकित पारस

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम से अगर कोई चीज ऊंची है तो वह है उनका दो अक्षर का नाम 'राम'। राम नामांकित पारस समुद्र में तैरने लगे, राजा सुकेतु की रक्षा राम नाम मंत्र का जाप करने पर स्वयं भगवान के बाण भी निष्फल हो गए। यह सब सतयुग की दास्तान है। आज कलि का प्रभाव सर्वत्र छाया हुआ है। इसके प्रभाव से मुक्त होना है तो हमें राम नाम में विश्वास जगाना होगा। प्रतिदिन लेखन या माला का नियम बनाना होगा। कुछ दिन श्रद्धापूर्वक ध्यान लगाकर करने पर अपने आप लगन हो जाएगी। मेरे अनुभव के अनुसार इसमें फायदा ही फायदा है, नुकसान नाम की कोई चीज नहीं है। मुझे मन की पवित्रता और परिवार में सुख-शान्ति एवं सम्पन्नता मिली है। एक विशेष संख्या में नियमपूर्वक मंत्र अलंकृत करने से अपने निजी या परिवार में आए संकट या विपदा का समाधान अवश्य होगा। अपना यह सुन्दर शरीर एक दिन साथ छोड़ देगा। अगर हमारे साथ चलेगा तो कमाया हुआ राम नाम ही चलेगा।

-अशोक नामदेव, बेसरोली, राजस्थान

आध्यात्मिक क्रांति

मैं राम नाम लेखन के प्रभाव से मानसिक तनाव से मुक्त हुआ हूँ। लेखन के प्रति दिन- प्रतिदिन रुचि बढ़ रही है। मेरे लेखन से प्रभावित होकर परिवार के लोगों में भी रुचि जागृत हो गई है। श्री राम नाम से मुझे आत्मिक शांति प्राप्त होती है। श्री राम नाम लेखन के प्रभाव से हमारे नगर में आध्यात्मिक क्रांति आ गई है। बच्चे-बच्चियों से लेकर बड़े-बूढ़े तक सभी इस साधना में संलग्न है। मैं अपने एवं आप सब के हृदय में बैठे श्री राम को प्रणाम करता हूँ। हे श्रीराम ! मुझे शक्ति एवं शान्ति प्रदान करें।

-पं. जगदीश नारायण तिवारी, देवरी, सागर,म.प्र.

आत्म शांति

सुख-दुःख तो जीवन में लगा ही रहता है जो शायद हमारे पूर्व कर्मों का परिणाम हो। मैं तो अल्प बुद्धि हूं और यही अनुभव करता हूँ कि इस कृपा प्राप्ति से प्रभु चरणों में जो अनुराग उत्पन्न हुआ है उससे मुझे आत्मशांति प्राप्त हुई है। गुरु-गोविन्द दोनों से यही याचना है कि इस अकिंचन के हृदय में यह अनुराग उत्तरोत्तर बढ़ता रहे।

-सुरेशचन्द्र शांडिल्य, एम. ए. (हिन्दी), डिप.टी. टिप.सी.,

भूतपूर्व अध्यक्ष म.प्र. शिक्षक संघ, देवरी

आत्म संतोष

जब से होश संभाला तब से श्रीराम का नाम स्मरण कर रहा हूँ और उससे मुझे आत्मशांति मिली है। फिर जब से लेखन सुरू किया आत्मसंतोष मिला। इसी कृपा से आज में धन-धान्य से परिपूर्ण हूँ। आज भी असंभव लगनेवाले कार्य बन रहे हैं।

राजेन्द्र कुमार जैन ``रज्जन``, देवरी, म.प्र.

परम कर्त्तव्य

लगभग दो माह पूर्व मेरा मन अत्यंत अशांत था तथा ऐसा लगता था कि मैं मानसिक रोगी होकर पागल हो जाऊंगा। तभी मेरी मुलाकात राम नाम लेखन प्रचार समिति के सदस्य से हुई और उनके प्रोत्साहन से मैंने लेखन कार्य प्रारंभ किया और मित्रों से भी करवाया। बड़ी मानसिक शांति मिली। अब मैं और मेरे साथी सभी राम नाम लेखन को अपना कर्तव्य मानकर कर रहे हैं। मेरे विचार से संसार का सभी सुख राम नाम में समाहित है। अतः संसार के सभी मनुष्यों को राम नाम जाप करना चाहिए एवं सभी पशु-पक्षियों को भी सुनाना चाहिए तभी हमारा मानव जीवन सफल होगा।

-जिनेश कु. जैन, बड़कुल, देवरी, म.प्र.

लेखन का चमत्कार

एक करोड़ नाम लेखन का संकल्प करने से बेईमानी द्वारा फंसाए हुए केस से बदनाम होने पर भी साफ बच गया और इज्जत बनी रही। कुछ कर्ज चुकाने के लिए अर्थव्यवस्था भी आश्चर्यजनक तरीके से हो गई। यह सिर्फ प्रभु-राम नाम लेखन का चमत्कार है। यही पूर्ण सत्य है। मेरा विश्वास है कि जिस दिन यह बात सर्वविदित होगी, देवरी की पैंतीस हजार जनता में से कम-से-कम १०,००० जनता राम नाम की दीवानी होकर नाच उठेगी।

-कृष्णानंद सक्सेना, देवरी, म.प्र.

पवित्र-क्रांति

'हां, आप इस भगवन्नाम के आंदोलन में क्रांति ला सकते हैं'

भगवन्नाम की महिमा वेद-शास्त्रों में सुविदित है, ऐसे हजारों उदाहरण हैं कि भगवत् नाम लेखन से आश्चर्यपूर्ण सुखद परिणाम सामने आये हैं। आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि इस आधुनिक समय में अनेक महापुरुषों, विचारवान व्यक्तियों, समाजसेवियों, श्रीमानों एवं नाम लेखन प्रेमियों ने इस भगवत नाम लेखन में क्रांति ला दी है, यदि आप भी इस पवित्र-क्रांति में सहभागी होकर पुण्य लाभ लेना

चाहें तो आप कम-से-कम इतना तो कर ही सकते हैं :-

यदि आपके पास फोन सुविधा है तो उसके द्वारा चर्चा या प्रचार करके लोगों को जोड़ सकते हैं, प्रतिदिन एक फोन तो कर ही सकते हैं।

यदि आपकी ट्रान्सपोर्ट या कोरियर सर्विस है तो इन अगवङ्गाम पत्रों को गन्तव्य स्थान पर पहुंचा सकते हैं।

यदि आप आर्थिक रूप से सम्पन्न हो तो कागज, स्याही, छपाई, डाकखर्च आदि के लिए यथा शक्ति सहयोग दे सकते हैं।

यदि आप अध्यापन कार्य से संबंध रखते हैं तो बच्चों को लेखन के लिए प्रेरित कर उनमें अगवत्-संस्कारों का बीजारोपण कर सकते हैं।

यदि आपकी प्रेस है तो छपाई कार्य में सहयोग दे सकते हैं।

यदि आप समाजसेवी हैं तो इसका भरपूर लाभ जन-जन को दिला सकते हैं।

यदि आप राजनैतिक हैं तो अपने सम्पर्क सूत्रों से जनमानस को इससे परिचित करा सकते हैं।

यदि आप धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय हैं तो भक्तजनों को इसकी महिमा से अभिभूत करा सकते हैं।

यदि आप सरकारी तंत्र से जुड़े हैं तो अपने प्रभाव से इस क्रांति को बिजली की सी गति दे सकते हैं।

यदि आप उद्योगपति हैं तो अपनी आय का एक हिस्सा नियमित रूप से इसमें लगाकर लोगों के सामने एक मिसाल कायम कर सकते हैं।

यदि आप कामकाजी पुरुष या महिला हैं तो अपने सहकर्मियों को इस कार्य में लगाकर पुण्य का भागीदार बना सकते हैं।

कहने का तात्पर्य है कि आप कहीं भी हों, किसी भी स्तर पर हों, कैसी भी परिस्थिति में हों, सतत् बिना किसी रुकावट के इस पुण्य कार्य में योगदान कर सकते हैं।

कितने ही ऐसे लोग हैं जो किन्हीं कारणोंवश अगवङ्गाम नहीं लिख पाते पर वे इस लेखन कार्य के अलावा उससे संबधित कार्यों में रुचि के साथ सहयोग देकर उससे भी ज्यादा पुण्य संचित कर सकते हैं इसमें कोई संदेह नहीं है।

आप इसी क्षण ऐसा संकल्प करें कि 'मुझे इस क्रांति में किसी भी प्रकार जुड़ना है अन्यथा वह जन्म व्यर्थ है' यह परम सत्य है कि अगवङ्गाम से बढ़कर कुछ नहीं है और इसमें योगदान देने वाले सचमुच धन्य हैं।

शेष अगवत्कृपा

-डॉ. प्रेम गुप्ता (वास्तु विशेषज्ञ एवं पामिस्ट), मुंबई

नाम शरणागति

आमि परेछी श्याम नामेर द्वार, हस्तेर भूषण आमार चरण सेवन,
मुखेर भूषण आमार श्याम गुणगान, कर्णेर भूषण आमार नाम श्रवण,
नयनेर भूषण आमार रूप दर्शन, कृष्ण नाम लेख आमार अंग भरे।

``मैं श्याम नाम के द्वार पर पड़ा हूँ, मेरे हाथों का शृंगार श्यामसुंदर के चरणों की सेवा है, मेरे मुख का शृंगार श्री श्याम के नाम का गुणगान करना है, मेरे कानों का शृंगार हरि नाम सुनना है, मेरे नेत्रों का शृंगार प्रभु के रूप का दर्शन करना है, कृष्ण नाम लेखन से मेरा अंग-अंग भरा हुआ है।``

-श्री चैतन्य महाप्रभु

राम नाम प्रताप

देव दुर्लभ मानव-योनि में अवतरित होना यानि चौरासी लाख योनियों की सर्वोच्च उपलब्धि (भक्ति की प्राप्ति) के लिए यह देह पाना। मानव देह पाकर भी हम इस उपलब्धि से तब तक वंचित रहते हैं जब तक रामांकित सेतु का निर्माण नहीं कर लेते। 'श्रीरामचरितमानस' का यह शाश्वत प्रमाण हम सब के जीवन का अकाट्य सत्य है कि जिस सीता रूपी भक्ति को रावण चुराकर ले गया था, उसकी पुनर्प्राप्ति के लिए रामजी को वानर सेना सहित सागर लांघना पड़ा, और सागर पार करने के लिए रामांकित शिलाओं से ही सेतु-निर्माण संभव हुआ। रामजी चाहते तो अपने संकल्प मात्र से सब कुछ कर सकते थे, पर उन्होंने विभिन्न लीलाएं हम सब के सन्मुख मानव-जीवन का आदर्श प्रस्तुत करने एवं भक्ति का पथ प्रदर्शित करने के लिए की। वानर सेना द्वारा की गई लेखन साधना की वही किरण, सद्गुरुदेव श्रीमद् दादूदयालजी महाराज की कृपा से हम सबके जीवन में पारमार्थिक पथ को आलोकित कर रही है। सद्गुरुदेव कहते हैं -

नाम रे, नाम रे, सकल शिरोमणि नाम रे,
मैं बलिहारी जाऊं रे।। टेक।।
दुस्तर तारे पार उतारे, नर्क निवारे नाम रे।
तारणहार, भवजलपार, निर्मल सारा नाम रे।
नूर दिखावे, तेज मिलावे, ज्योति जगावे नाम रे।
सब सुख दाता, अमृतराता, दादू माता नाम रे।
(श्री दादूवाणी, पद क्र. २७०)

श्री नाम महाराज की पूजा एवं अर्चना

सभी भक्तजन अपने-अपने इष्ट की पूजा-अर्चना, अपनी भावना के अनुसार, सामर्थ्य के अनुसार, अच्छी से अच्छी तरह करते हैं। प्रभु के लिए सुंदर मंदिर, उत्तम आसन, बहुमूल्य वस्त्रालंकरण एवं सुस्वादु व्यंजनों का भोग अर्पित करते हैं। धूप, दीप, पत्र पुष्प आदि से अर्चना करते हैं। इस तरह हमने भक्तजनों को नाना प्रकार से प्रभु के प्रति अपनी भावनाएं अर्पित करते देखा है।

कलि काल में हरि प्रेरणा से सर्व सहज, सरल एवं सुलभ साधना नाम महाराज की पूजा बताई गई है, जिसमें सम्मिलित होकर आज का मानव सत्युग की तपस्या, त्रेता का यज्ञ एवं द्वापर के पूजन-अर्चन का फल प्राप्त करता है। शुद्धता से स्वच्छ आसन पर प्रतिदिन निश्चित समय पर, निश्चित अवधि के लिए नियमित रूप से किया जाने वाला नाम अलंकरण सत्युग की तपस्या है। अलंकृत प्रपत्रों को शुभ-मुहूर्त में विशेष रूप से मंदिरों या आश्रमों में प्रतिष्ठित करना त्रेता का यज्ञ है। उत्कृष्ट प्रकार के पत्रक (भोजपत्र, स्वर्ण पत्र, रजत या ताम्र पत्र) पर बढ़िया से बढ़िया स्याही जैसे, केशर, सुनहरी, रूपहरी या भिन्न-भिन्न इंद्रधनुषी रंगों से अल्पना की तरह अलंकरण करना द्वापर का पूजन-अर्चन है। चूंकि कलियुग में मानव कठिन साधना नहीं कर सकता, अतः प्रभु ने अत्यंत करुणा कर बाकी तीन युगों की साधना का सरलीकरण नाम लेखन के रूप में उसके सन्मुख प्रस्तुत किया है।

श्री नाम महाराज साकार रूप में सर्वत्र सदा अवतरित हैं, इसकी अनुभूति सद्गुरुदेव की कृपा से सहज ही हो सकती है। इस प्रकार कलिकाल के हम पामर जीव विशेष रूप से कृत-कृत्य हैं कि हमें यह अनुपम एवं अत्यन्त पवित्र दिव्य अनुभूति इतनी सरलता से उपलब्ध है। जिस प्रकार हमारे देवी-देवताओं के असंख्य नयनाभिराम चित्र हमारे सन्मुख प्रस्तुत हैं उसी प्रकार नाम महाराज भी प्रभु-प्रेरणावश भक्तजनों की भावनाओं द्वारा नित्य नये साज-शृंगार लिए हमारे सन्मुख प्रकट हो रहे हैं। प्रभु कृपा की यह किरण सर्वथा

अनूठी एवं परम आनंददायक है। भक्तजनों की लेखनी से श्री नाम महाराज इंद्रधनुषी रंगों में अल्पना सजाए, हमारे देवी-देवताओं, हनुमानजी, गणेशजी, दुर्गाजी आदि आकार रूप में स्वस्तिक कलश, ध्वजा, त्रिशूल, दीपक, शिवलिंग, भारत भूमि का रेखाचित्र, दोहे, चौपाई और पता नहीं कितने-कितने शृंगार धारण किए हैं। जैसे- 'हरि अनंत हरि कथा अनंता' उसी प्रकार 'हरि नाम अनंत, नाम सिंगार अनंता' - आज दृष्टिगोचर है। अध्यात्म मार्ग पर मानव जीवन के परम लक्ष्य (भक्ति) का यह अनूठा पथ श्रीमद् दादूदयालजी महाराज की विशेष अनुकम्पा से प्रकट हुआ है। सद्गुरुदेव कहते हैं -

दिन दिन नवतम भक्ति दे, दिन दिन नवतम नांव।
दिन दिन नवतम नेह दे, मैं बलिहारी जाउं॥
(श्री दादूवाणी-विनती का अंग)

हे नाथ! आपके नित्य नवीन अलंकरण को मैं प्रतिदिन नए अवतार के रूप में निहार कर नित्य नूतन भक्ति का आस्वादन करूं तो मुझे नित्य नए स्वाद की भक्ति में ओतप्रोत होने का आनंद आवे, और मैं सहज ही आपके प्रति न्यौछावर हो जाऊं।

लेखन योग

आइये, श्री गुरुदेव प्रदत्त एक और अनूठी वाणी का आस्वादन करें -

षट् चक्र पवना फिरे, षः सौ सहस्र एक बीस।
जोग अमर जम कूं गीले, दादू बिस्वा बीस॥
(श्री दादूवाणी-सजीवन का अंग)

मानव देह में स्थित षः चक्रों (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनहद, विशुद्ध एवं आज्ञा) में पवन प्रतिदिन लगभग २१६०० बार फिरता है, यानि सामान्यतया मनुष्य प्रतिदिन (२४ घंटे में) २१६०० बार सांस लेता है और प्रत्येक श्वास में राम को संग रखने वाला योगी (साधक) यम को अपने रास्ते से हटाकर सहज ही अमृत तत्व की प्राप्ति करता है।

प्रत्येक श्वास में राम का नाम लेना ही मानव जीवन का परम कर्तव्य है। कलिकाल के प्रभाववश सामान्य मानव यदि प्रति श्वास राम नाम लेना स्मरण न रख सके तो श्री सद्गुरुकृपा प्रदत्त 'राम-लेखन' साधना में नियमित रूप से संलग्न होकर भी मानव जीवन के परम कर्तव्य का पालन किया जा सकता है। २१६०० का दशमांश यानि २१६० राम-नाम प्रतिदिन अलंकृत किए जाएं तो साधक का प्रत्येक श्वास सार्थक एवं वर्तमान पवित्र बनता है। (सद्गुरुदेव की अनोखी कृपावश संस्थान द्वारा वर्तमान में प्रचलित पत्रकों में २१६० कोष्ठक बने हैं जो कि एक अत्यंत अद्भुत एवं सुखद संयोग है)मंत्र लेखन से जन्म-जन्मांतर के दोष नष्ट होने लगते हैं। जिसका वर्तमान पवित्र है उसके भविष्य की दिव्यता भी निश्चित है। ऐसा साधक अपने सम्पर्क में रहने वाले बन्धु-बान्धवों एवं इष्ट-मित्रों को पुण्य प्रेरणा प्रदान करते हुए, वातावरण, समाज, राष्ट्र, विश्व एवं सम्पूर्ण ब्रह्मांड को भी राम नामी शीतलता प्रदान करनेवाला बन सकता है।

'राम नाम लेखन' केवल साधन ही नहीं वरन् भगवत्-आराधना का एक अनोखा फल है जोकि इस साधना में ही अपरोक्ष रूप से समाहित है। जैसे ही साधक इसमें प्रवृत होता है, उसे इस अलौकिक नाम-फल का अनुभव शनैः शनैः सहज ही होने लगता है।

हे सद्गुरुदेव! दिन-प्रतिदिन इस लेखन-साधना के प्रति भगवद्जनों की बढ़ती हुई हर्षपूरित भावनाओं को देखते हुए, यह लेखन गंगा अविरल बहती रहे; इसलिए आज हम सब आपके सन्मुख आपके ही प्रेरणा-छत्र के तले ५१ खरब लिखित जप अनुष्ठान करने को कृत-संकल्प हुए हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी कृपा का यह झरना ५१ खरब तो क्या, असंख्य-असंख्य में परिणत होकर युग-युगांतर तक मानव-जीवन को

भक्ति-सुमन से सुवासित करता रहेगा।

प्रेरणा प्रवाह महंत महाराज श्री रामवल्लभदास जी एवं स्वामी क्षमाराजी
(संरक्षक एवं प्रायोजक श्री दादूलीला ``राम नाम परिक्रमा`` शोध संस्थान)
श्री दादूपालकां, धाम मैराणा देवस्थान, पो. बिचूण, जि. जयपुर,
राजस्थान, पिन कोड - ३०३०१०.